॥ श्रीगणेशाविजयते ॥

शिवराजभूषणग्रन्थ ॥

जिसमें

कविवर भूषणजीका जीवनचरित्र, शिवराजभूषण शिवराजदृष्टपञ्चक, शिवाबावनी व छत्रशालदशक के अतिरिक्त औरभी फुटकल कवित्तसंग्रह कियेगये हैं।

जिसको

पं० शिवराजबली शुक्ल उन्नाम प्रदेशान्तर्गत चदर्का निवासीने अतिपरिश्रम से संग्रह किया।

उसीको

प्रोप्राइटर सेठ टीकारामजीने निज "ज्ञानभास्कर प्रेस" [illegible] बाराबङ्कीमें छपाकर प्रकाशित किया।

"ज्ञानभास्कर प्रेस" बाराबङ्की सन् १९०४ ई०

भ[illegible]रित।

महाकवि भूषण त्रिपाठी कश्यपगोत्रीय कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे। कानपुर जिले में पतितपावनी यमुना नदीके किनारे टिकमापुर गांव अबतक भूषण के नामको चिरस्मरण कराने के लिये वर्तमान है। संस्कृतज्ञ लोग इस टिकमापुर को त्रिविक्रमपुर का अपभ्रष्टस्वरूप बताते हैं। इसी टिकमापुर गांव में भूषण कविराजका जन्म हुआ था। आपके पिताका नाम रत्नाकर था।

गङ्गा-यमुनाके मध्यवर्ती अन्तरवेद देश में एक प्रवाद है। "शिवसिंहसरोज" कारने उसीके आधार से लिखा है, कि रत्नाकरजी अपने गांवसे आधकोस दूर देवीजी के स्थानपर नित्य दुर्गापाठ करने को जाते थे। देवीका नाम "वनकीभुइंयाँ" था। एक दिन भगवती प्रसन्न होगई। रत्नाकर को चार भक्तों के मुण्ड दिखाकर बोलीं, कि यही चारों तेरे पुत्र होंगे। कुछेक दिनोंहीमें देवीकी वाणी सच्ची हुई। पहले चिन्तामणिका जन्म हुआ, पीछे भूषणका, भूषण से छोटे मतिराम और मतिराम से भी छोटे जटाशङ्कर उर्फ नीलकण्ठ हुए।

तीनों बड़े भाई तो भाषाके ऐसे कवीश्वर हुए, कि उनका नाम कभी मिटनेवाला नहीं है। और चौथे भाई नीलकण्ठ एक महात्माके आशीर्वाद से बड़े कवीश्वर हुए। इन नीलकण्ठ के बनाये हुए कई फुटकल कवित्त मिलते हैं, पर कोई पूर्ण ग्रन्थ आजतक नहीं देखागया। शेष चिन्तामणि और मतिराम का कुछ वर्णन करके तब भूषण कविका जीवनचरित्र लिखेंगे। शिवसिंहसरोजकारने इन चारों भाइयोंका जन्म सम्वत् १७२९-३०-३८ लिखा है, भूषणका जन्म भी सम्वत् १७३८ लिखा है। पर यह बड़ी भूल है। स्वयं भूषण कवि अपने शिवराजभूषण ग्रन्थकी समाप्ति में सन् १७३० लिखते हैं। अर्थात् महाराज शिवाजीके सिंहासनारूढ़ होनेके १ वर्ष पहले वह ग्रन्थ बना। अगर हमारे देश के काव्यरसिक केवल रस पीनेके लिये खुद गरज न होकर कुछ कृतज्ञताका दावा रखते, तो आज टिकमापुर में महाकवि-भूषण का कोई स्मरणस्तम्भ रहता। पर कहां !—स्मरणस्तम्भ तो दूरकी बात है, भूषणजी का कोई जीवनचरित्र भी अबतक नहीं लिखागया। जो कुछ लिखाजाता है, सो केवल लोकचलित किम्वदन्ती तथा बम्बई के सुप्रसिद्ध "निर्णयसागर" छापेखाने में छपी हुई यदुवंशीय पुस्तकालय के मालिक यदुवंशी भाटिया ठाकुर गोवर्धनदास लक्ष्मीदास के द्वारा प्रकाशित भूषणचरित्रके सहारे। भूषणजीका जन्म ठीक ठीक न

बताने के कारण, कहने को तो हमने भी शिवसिंहसरोजकारपर आक्षेप करदिया है। पर है एकही बात,—उन्होंने जन्म सम्वत में भूल की है; पर हम कुछ जानतेही नहीं। अनेक लोगोंका अनुमान है, कि आप शाहजहां बादशाह के राजत्व-समय में जन्मे थे। तसवीर के देखने से मालूम पड़ता है, कि भूषणजी शिवराजजीके समवयस्क थे और कौन जाने २०। २५ वर्ष की उमरही में आप काव्यरचना में पटु होगये हों। इसी तरह आपके मरण समय का भी पता नहीं लगता। जो हो, आप शिवाजीके पुत्र सम्भाजीके दरबारमें भी रहे थे। इससे जान पड़ता है, कि शिवराजके मरनेके पीछे भी आप कुछ समयतक जीते रहे ॥

चारों भाइयों में बड़े चिन्तामणि जी भाषा साहित्यके आचार्यों में गिने जाते हैं। यह बहुत दिनोंतक नागपुरके सूर्य्यवंशी भोंसिला मकरन्दशाहके यहां रहे। उन्हीं के नामसे छन्दविचारनामक पिङ्गल का ग्रन्थ बहुत भारी बनाया। काव्यविवेक, कविकल्पतरु, काव्यप्रकाश, रामायण और श्रीमद्भागवत,—ये छः ग्रन्थ आपके सरस कवित्त और नाना छन्दों की गवाही दे रहे हैं। आप चित्रकूट के बाबू रुद्रशाह सुलङ्की, बादशाह शाहजहां और जैनदीन अहमद के दरबार में भारी भारी इनाम पाया किये हैं। इनके कवित्तों में बहुत जगह मणिलाल नाम भी पाया जाता है। आपके ग्रन्थों में सन् १६२७ ई० से सन् १६५८ ई० तक का पता लगता है।

भूषण के छोटे भाई मतिराम भी कविता के आचार्यों में गिने जाते हैं। आप भी बड़े बड़े राजाओं के दरबारमें रहे थे। उद्योतचन्द्र कुमायूँनरेश, भाऊसिंह हाड़ा, कोटा बूंदी के राजा छत्रसाल तथा शिवाजीके पुत्र सम्भाजी अर्थात् शम्भुनाथ के दरबारों में आपने बड़ी नामवरी पाई थी। इनके ग्रन्थों में सन् १६८०—९८ ई० के बीच ललितललाम बना। यह महाराज भाऊसिंहके नामपर उत्तम अलङ्कारग्रन्थहै। श्रीनगरवाले बुन्देला फतहशाह के नाम से आपने छन्दःसार पिंगल बनाया। आपके दो ग्रन्थ और भी हैं, प्रथम अलङ्कारपञ्चाशिका और द्वितीय रसराज। इन सबोंमें रसराज का जितना आदर और प्रमाण है, शायद नायिकाभेद के ग्रन्थों में उतना दूसरेका नहीं। अबतक रसराजपर कई टीकायें होचुकी हैं। पहलेही कहचुके हैं, कि सबसे छोटे भाई जटाशङ्कर उर्फ नीलकण्ठ की स्फुट कविता के सिवाय कोई निबन्ध नहीं देखने में आया। आप शिवाजीके पुत्र शम्भुजीके दरबार में रहे थे। अनेक लोगोंका अनुमान है, कि कुल ५५। ५६ वर्ष हुए, तबतक टिकमापुरके इस वंश में कवीश्वरों का ही जन्म होता रहा है। कालक्रम से अब इस कविवंशका पता नहीं लगता, कि वह लोग अब क्या करते हैं। गत सम्वत् १९०१ विक्रमाब्दतक "लालमणि" के

प्रणेता प्रसिद्ध कवि बिहारीलालजी विद्यमान रहे थे। नीतिके सतसई प्रसिद्ध दोहोंकी वृन्दसतसईके कविवृन्द और कविलालजू भी इसी वंश में थे।

अथ प्रकृतमनुसरामः। कहते हैं, भूषणको पहले कविताका कुछ बोध न था। आपके बड़े भाई चिन्तामणि दिल्लीपति औरङ्गजेबके मशहूर दरबारी कवि थे। कवि क्या थे, राजा थे। चिन्तामणिके कमाये हुए धनकोही भूषण भी खाते थे। लोग यह कहते थे, चिन्तामणि कमासुत सुपूत और भूषणघर-रहा कुपूत है। एक दिन भूषणकी भौजाई अर्थात् चिन्तामणिकी धर्म्मपत्नीने भी अपने पतिके कमासुत होने और देवर भूषणके कपूत होनेका बड़े गर्व्वसे ताना दिया। भूषणभौजाईके वाक्यबाणसे विद्ध होकर कुमायूं नरेशके यहां गये। पहुँचते पहुँचते कविता-रचनाका भी अभ्यास कर लियाथा। कुमायूंनरेशने उनके "उद्धलत मद अनुमद ज्यों जलधिजल।" इस कवित्तसे उनपर प्रसन्न होकर एक लाख रुपया दिया और कहा, "ऐसा दाता तुम्हें न मिलेगा।" यह स्वभिमानभरी बात सुनकर भूषणने कहा, "ऐसे दाता तो बहुत होंगे पर मुझसा त्यागी याचक न मिलेगा।" भूषणने उस धनराशिको तृणसमान त्याग दिया। लेकिन कोई कोई कहते हैं कि पहले शिवराजके यहां आदर पाकर भूषण फिर कुमायूंनरेशके यहां गये थे। कुमायूंनरेशने यह समझा, कि भूषणको शिवराजके यहां कुछ न मिला इस सबबसे यहां आये हैं; सो इनको धन देना चाहिये। उसी मौकेपर भूषणने उनके धनको त्यागकर अपने आनेका कारण शिवाजीका यशोविस्तार बताया था।

पन्नाके महाराज हिन्दुपूज्य प्रातःस्मरणीय छत्रसाल बाशुबुशल्यके दरबारमें आप छः मासतक रहे शेषमें भी छत्रसालने उन्हें जाने न दिया। कहते हैं जब भूषण पन्ने पहुँचे थे तो महाराज छत्रसालने आपकी पालकीको अपने कन्धोंपर धरलिया था और कहा था कि हम आपकी सेवाही करेंगे आपको देने लायक नहीं हैं। भूषणने छत्रसालदशक उन्हींके नामपर बनाया। कहा——

"तेरी बरछीने बरछीने हैं खलनके——
"एक हाड़ा बूँदी धनी मरद महेवावाल।
"सालत नौरङ्गजेबके यह दोनों छत्रसाल॥ १
"वे देखो छत्तापता ये देखो छत्रसाल।
"वे दिल्लीकी ढाल ये दिल्ली ढाहनवाल॥ २

औरङ्गजेबको हिन्दी कविताका बड़ा शौक था शौक क्या था अपने पूर्वजोंके दरबार से कवियोंके पिताड़ित होनेमें अपनी प्रतिष्ठा-हानि समझता था। कवीश्वर लोग भी औरङ्गजेबकी तारीफ करके बादशाहको हँसाया करते और यों द्रव्य प्राप्त करते थे।

कवीश्वर लोग औरङ्गको गौरंग कहा करते थे । एक दिन औरंगजेबने मयूरसिंहासन पर बैठकर कहा, "हे कवियो ! तुम लोग मेरी तारीफही किया करते हो । क्या मुझमें कोई ऐब नहीं ? मेरे ऐबको भी बखानो, तब जानें कि तुम लोग सत्यवादी हो ।" असलमें औरंगका मतलब यह था, कि इस बहाने अपने परोक्ष-निन्दुकको पता [illegible] । उस समय समस्त कवि चुप रह गये । चिन्तामणिके साथ रहनेसे भूषणकी बातचीत भी बादशाहसे हो चुकी थी । उस समय सबको चुप देख भूषण बोले,—"जहांपनाह ! खुशामद खुदाको भी प्यारी है ! इसीसे हम लोग आपके दोष छिपाकर केवल गुणही बतलाते हैं ! लेकिन जब आप हम लोगोंकी सत्यवादिताकी परीक्षा करनेको बैठे हैं, तो अब आपके दोष कहनेमें ही डर क्या है ? अगर आप सत्य बातही सुनना चाहते हैं, तो मैं हाजिरहूं ! आप मरद हो,तो सुनिये ।"

औरङ्गजेब मनमें सोचने लगा, कि न जाने, यह नौजवान कवि क्या कह उठे । पर जबान दे चुका था, सो बोला,—"इसी समय खुशामद छोड़कर मेरी सच्ची तारीफ़ करो ।" भूषणने कहा, "बादशाह सलामत ! मैं जानता हूं, कि सच्ची तारीफ करने से मेरा सिर धड़से अलग किया जावेगा, सो आप इस आज्ञाको मौकूफ रक्खें ।" बादशाह ने कहा, "अच्छा, सोही सही !" भूषण बोला, "हुजूर ! इस वक्त तो मेरी बात मानते चले जाते हैं, लेकिन जिस वक्त सच्ची तारीफ सुनेंगे, उस वक्त मिजाज बदल जावेगा । इस लिये मेरे वध बन्द रखनेका फरमान लिख दें और सब दरबारी अमीरोंकी गवाही लिखवादें ।" औरंग और क्या कर सकता था, चटसे फरमान लिखा दिया । तब भूषण ने ।

किबलेकी ठौर बाप बादशाह शाहजहां—१
हाथों तसबी न लिये पात उठि बन्दगीको—२

आदि दो कवित्तोंको पढ़कर "सौ सौ चूहे खायके बिलाड़ी तपके ।" पर शेष किया । औरंगजेबको यह वाक्यशर चुभही थे, कि दरबारके कई सत्यप्रिय कवि और राजपूत "शाबाश भूषण । धन्य भूषण !" कहने लगे । तब तो बादशाहकी क्रोधाग्निमें मानो आहुति पड़ी, तलवार खींचकर औरंगजेब स्वयं भूषणको मारने उठा । पर न्यायपर मुसाहिबोंने प्रतिज्ञालङ्घन और अपकीर्तिका डर दिखाकर औरंगको रोका । बादशाहने तब झुंझलाकर यही कहा, "जा भूषण ! तुझे [illegible] दिया ।" भूषण गजेन्द्रगतिसे चलते बने और घर आकर अपनी केसर घोड़ी सजाई ! औरंगजेब अपने खुशामदी कवियोंको साथ लेकर जुम्मा-मसजिदमें नमाजको गया । इतनेमें भूषण कवि भी केसर घोड़ीपर सवार होकर उधरसे निकले । बादशाहको तो उन्होंने सलाम न किया, पर उनके साथके एक कवीश्वरको नमस्कार किया, औरंगजेब और भी जल गया और अपने पार्श्वचर खुशामदी कविको

इशारा किया, कि इससे पूछो, अब यह कहां जाकर शरण लेगा ? उस कलाँवतने कहा—

"है रंग नौरंगशाहको और न दूजो रंग।" भूषण भी सब समझ गये उत्तरमें कहा,—

"केतिक देश जित्यो दलके बल * *
सो रंग है शिवराजबली जिन
नौरंग में रँग एक न राख्यो।"

औरंगजेब इस समय ईर्ष्यासे और भी जल गया ! वह अपने भरे दरबारियोंका भीरुत्व देख चुका था। उसने समझ लिया, "शिवाजी वैसेही वीर हैं, जिस वक्त भूषण उसे वीरत्वका बढ़ावा देगा, तो न जाने, उसकी फौज क्या न करेगी ! हाय मैंने भूषणको क्यों न मरवा डाला !"

अपने भविष्यको शिवाजी और भूषणके सम्मिलनसे और भी बुरा समझकर दूरदर्शी औरंगजेबने कई सवारों को भूषणके पकड़नेके लिये पीछे २ भेजा। पर भूषणकी केसर घोड़ीको कोई न पकड़ सका। सवार खिसियाकर लौट आये। भूषण जंगल और गिरि दरियोंकी राहसे रायगढ़ पहुंचे। रायगढ़के बाहर मनोरम भूमि बाग झरना स्रोत आदि देखकर भूषण वहीं विश्रान्त हुए। इतनेमें भूषणको एक सुन्दर उन्नत पोलेको टहलाता हुआ दिखाई दिया। उसके उन्नत और तेजस्वी चहरेको देखकर तथा माथेपर देवीका रक्त तिलक देखकर भूषणने जान लिया, कि यह कोई भाग्यवान पुरुष है, भूषणने उसे राजपुरुष जानकर अभिवादन किया। उस अज्ञात पुरुषने पूछा, "तुम कौन हो ?" भूषणने औरंगजेबके यहांसे निकलने और शिवाजीके दरबारमें आना चाहने की आद्योपान्त सब कैफियत सुनाई।

तब उस पुरुषने कहा, "जरूरही आपने शिवाजीकी प्रशंसाके कवित्त कहे होंगे, सोभी सुनाइये।" भूषणने कहा, "पहले आप यह तो बताइये कि आप हैं कौन ?" उस तेजस्वी पुरुषने उत्तर दिया, "मैं शिवाजी महाराजका सेनापति हूं; दूसरा उनका छठा अंग हूं; सो अपने स्वामीकी तारीफ अवश्य सुनूंगा।" भूषणने समझा, कि ऐसे प्रधान राजपुरुष यदि मेरी कविता सुनें, तो बुरा क्या है ? यह सोचकर बड़ी कड़कके साथ आपने वीरभावसे "इन्द्र जिमि जम्भपर" आदि कवित्त पढ़कर "त्यों म्लेच्छवंशपर शेर शिवराज है।" पर शेष किया। कवित्त था, कि जादू ! उस वीर पुरुषका शरीर वीर रससे फूल उठा; बोला, फिर पढ़ो ! फिरि पढ़ो, फिर पढ़ो, होते होते भूषणने यही कवित्त बावन बार पढ़ा। कोई २ कहते है, कि बावन बार एकही कवित्त नहीं कहा, वरं न्यारे २ कवित्त कहे ! वेही बावन कवित्त शिवाबावनी के नामसे प्रचलित हैं। कहते हैं, कि बारम्बार कवित्त सुनकर भी उस तेजस्वी पुरुषकी तृष्णा शान्त न हुई।

पर कविभूषण ही उस वक्त थक गये। तब वह वीर पुरुष "आप दरबार में आइये" कहकर चलता हुआ।

दूसरे दिन भूषण मैंसिला-भूप "सीसोदिया कुलके दिया". महाराज शिवराजके दरबार में गये। वहां उस सेनापतिको बहुत खोजा, पर कहीं न पाया। लाचार सिंहासनपर बैठे पुरुषकोही नमस्कार अपने सोते को जगानेवाले कवित्त पढ़े। सारी सभा मुग्धसी-होकर वाह वाह करने लगी। एक सेनानीने उठकर भूषणको अग्र्य आसन पर बैठा दिया। कुछेक समय उपरान्त भूषणने गौर करके देखा, तो जानपड़ा, कि सिंहासनासीन पुरुष अर्थात् स्वयं महाराज शिवाजीहीने अपनेको सेनापति कहकर मेरे कवित्त सुने थे। भूषणको यों घबरातासा देखकर महाराज शिवाजीने कहा, "घबराओ मत! तुम मेरे दरबार की छवि बढ़ाओ! यहां औरंगका डर नहीं! मुझे आप सरीखे कविकी जरूरत थी।" महाराजकी अभयवाणी सुनकर भूषणने।

१ जोरा करि जैहैं जूमलाहके नरेश पर
२ दार्दाके रसैयनकी दाढ़ीसी रहति छाती
३ उतरि पलंगते जिन दियो ना धरापै पग

इत्यादि तीन कवित्त पढ़े। तब वीररसके मारे शिवाजीका दरबार गरज उठा। महाराजने कहा, "भूषण! तुमने मुझे कल जो कविता सुनाई थी, उसे सौ बार सुनने की मुझे इच्छा थी! मैं तुम्हें सौ गांव, सौ हाथी और सौ सरापा खिलअत देता। पर तुम बावन बारही कहकर शिथिल हुए। इस लिये तुम्हें बावन गांव, बावन हाथी और बावन खिलत देते हैं।" भूषणने कहा, "मैं गांव हाथी वस्त्रके लिये नहीं आया! मैं आपको मुसलमानोंके अत्याचार से सनातन धर्म्मका बचानेवाला भगवदवतार समझता हूं। आप मनुष्य नहीं, सचमुच पूर्णब्रह्म हैं। आप धर्म्मके रक्षक होकर हिन्दुओं की चोटी बेटी रोटी लँगोटीके पालक हैं। आप देवालय और गोब्राह्मणोंके प्रतिष्ठापक देशाभिमानी हैं।" शिवाजीने तो भी उक्त इनाम दिया। वास्तव में भूषण कविके द्वारा अमर होकरही शिवराजकी मूर्ति और उनकी तलवार "भवानी" आजतक दक्षिणमें घर घर पुजती है। और शिवराजका नाम प्रातःस्मरणीय होगया है। भूषण स्वयं शिवाजीके साथ युद्ध में जाते थे और उनकी फौजको बढ़ावा देते थे। भूषण उसी दिनसे शिवाजीके राजकवि हुए थे भूषण आपका नाम न था। नाम क्या था, सो जानते नहीं। पर शिवराजभूषणमें लिखाहै, कि हृदयरामके पुत्र चित्रकूटनरेश सोलङ्की महाराज रुद्रने मुझे कवि-भूषणकी पदवी दी। इससे जानते हैं, कि भूषण उनके दरबार में भी रहे थे, सोलङ्कियोंकी तारीफके भी आपके कई कवित्त इसने कल्पिलेशित किये हैं।

भूषण को कई वर्षों के बाद घर जानेकी इच्छा हुई, तो महाराज शिवाजीने आप को उचित बिदाई दी। मार्ग में छत्रसाल बुन्देलाके राज्यसे निकले। छत्रसालने जब भूषणकी पालकी का बांस कन्धेपर धरा, तो भूषणने हाहाकार किया। इसमें महाराज की गुणग्राहकता को सराह कर

" साहूको सराहौं कि सराहौं छत्रसालको! "

यह कवित्त पढ़ा। भूषण जब घर पहुँचे, तो यह खबर दिल्ली में पहुँची। दिल्लीसे औरंगजेब ने चिन्तामणिको भेजकर भूषणको बुलाया। भूषण ने कहला भेजा, कि हम बादशाह के प्राणपिपासु शिवाजीके प्रशंसक हैं। यदि शिवाजी की तारीफ सुनना है, तो हम आसकते हैं। चिन्तामणिकी जबानी भूषणकी यह प्रतिज्ञा सुनकर बादशाह ने कहला भेजा, कि मुझे तुम्हारी सब बातैं मंजूर हैं, तुम आओ। भूषण तब दिल्ली दरबार में गए। बादशाह ने कहा, कुछ कविता सुनाइए। भूषण ने जवाब दिया, कि मेरी कविता सुनना है, तो पहिले हाथ धो डालिए। बादशाह ने कहा, क्यों? भूषण ने कहा, मेरे भाई चिन्तामणि की काव्य सुनते २ आपका हाथ शृंगारपर बड़ा होगया है, मेरी कविता सुनकर आपका वही गन्दा हाथ मूछोंपर जावेगा। बादशाह ने कहा " यदि मूछोंपर हाथ न गया, तो तुम्हारा शिर काट लेंगे। " भूषण ने स्वीकार कर के बीररस का गर्जताहुआ समुद्र बहाया। पर शिवाजीका यश बादशाहको असह्यहुआ सो बादशाह ने कहा, " हम सार्वभौम राजाहैं, शिवाजी माण्डलिक राजा है; हम सब राजा कर देते हैं, सो शिवाजीका यश माण्डलिक राजाओंकासाही होना चाहिए। " तब भूषण ने औरंगजेबको भ्रमर, अन्यान्य राजाओंको नानाविधि पुष्प तथा शिवराज को भ्रमर दुर्लभ चम्पकपुष्प बताकर--

" अली अवरंगजेब चम्पा शिवराज है। "

कवित्त कहा। और फिर अपनी प्रतिज्ञा पूर्ण करने के लिए ७ कवित्त शुद्धोत्कृष्ट बीररस के वेदध्वनि अमृतध्वनि आदि में कहे। बादशाह का हाथ मूछों पर पहुँचा। बादशाह ने भूषणको बहुतसा इनाम दिया। यह सम्वाद शिवराजकी ओरसे दिल्ली में रहनेवाले दूतने शिवराजको भेजा। तब शिवाजीने फिर आज्ञा लिखकर भूषणको अपने यहां बुला लिया। भूषणने तब वहीं संसारयात्रा निर्वाहकी। भूषणजीके बनाए भूषण हजारा, भूषणउल्लास, दूषणउल्लास तीन ग्रन्थ और भी सुनेगए हैं। पर हमने महाकवि कालिदास के हजारे में भूषणके नवरस मय ७० कवित्त हैं। पर हमने रौद्रबीर भयानक अद्भुतही आपके कवित्तों में विशेष देखाहै, पावसऋतुके वर्णन के एक कवित्त में भी आपने बीररस कियाहै; सुनाहै, " आए बीर बादर बहादुर मदनके " इस समस्यापर

भूषण चरित ।

भूषण के अनेक कवित्त हैं। इससे ज्ञात पड़ता है, आपने अन्यान्य ऋतुओं के भी कवित्त बनाए होंगे। आपके अनेक कवित्तों में रूसी फारसी आदिका वर्णन है, वह भी हमने कहीं देखे थे, पर अब नहीं मिलते। यदि किसी महाशय के पास आपकी कुछ नूतन कविता हो, तो भेज दें।

शिवाजी महाराजका जन्म शालिवाहन शके १५४९ की वैशाख सुदी २ और स्वर्गयात्रा शाके १६०२ को चैत्र सुदी १५ को हुई थी। आपके मूलपुरुष मालो जी भोंसला थे। मालोजीके मालमकरन्द हुए। इन्हें सरजाहकी पदवी थी; इसीसे शिवाजी भी सरजा कहलाते थे। मालमकरन्दजीके [illegible] उर्फ शाहजी हुए। शाहजीके दो पुत्र थे, एक तो हमारे शिवराज और दूसरे दासीपुत्र व्यङ्कटजी। ये चीणापट्टण वा चन्दीचन्दावर के राजा हुए। बाकी महाराज शिवाजीके दो और सपुत्र थे। एक तो महाराज शम्भाजी वा शम्भुनाथ और दूसरे राजाराम। शम्भाजी के वंशधर सितारे में राज्य करते थे और राजारामके वंशधर कोल्हापुर राज्यमें अबतक छत्रपति हैं। अर्थात् शिवाजीके ज्येष्ठपुत्र शम्भाजीके पुत्र शाहुराजा ने दत्तकपुत्र रामराजा को लिया। रामराजा के दूसरे शाहु और दूसरे शाहुके प्रतापसिंह उर्फ बूबासाहब हुए। इन्हीं प्रतापसिंहके ज्येष्ठभ्राता तीसरे शाहजी निपुत्र मरे, सो सितारेका राज्य खालसा हुआ। इधर शिवाजीके कनिष्ठ पुत्र राजारामके दो पुत्र हुए, एक शिवाजी दूसरे राजाराम। इन शिवाजीही से कोल्हापुर राज्य चला है॥

शिवाजी महाराजने १८।१९ वर्षहीकी उमर से युद्ध प्रारम्भ किया था। मावला लोगोंका बल उनके साथ था। २० वर्ष की अवस्था में मुसल्मान बादशाहसे लड़ाई लड़कर उन्होंने बीजापुर जीता था और दिनपर दिन औरंगजेबका राज्य २६ वर्षतक लड़कर दबातेही गये। शेषमें पेशवागण, ग्वालियर, होल्कर, झांसीके महरठोंने सारे भारत को दबाया।

प्रार्थिक
शिवराज शुक्ल
बाराबंकी

श्रीगणेशायनमः ॥

अथशिवराजभूषण ग्रन्थ ॥

उपोद्घात ॥

छप्पय ॥

जय जयन्ति जय आदिशक्ति, जय कालि कपर्दिनि ।
जय मधुकैटभ छलनि देवि, जय महिष विमर्दिनि ॥
जय चमुण्ड जय, चण्डमुण्ड भण्डासुर खण्डिनि ।
जय सुरक्त जय रक्तबीज, बिड्डाल बिहण्डिनि ॥
जयजयनिशुम्भशुम्भद्दलनि, भनिभूषणजयजयभननि।
सरजासमर्त्थशिवराजकहँ, देहिविजयजयजगजननि ॥१

दो० । तरनि जगत जलनिधि तरनि, जयजय आनँद ओक ।
कोक कोकनद शोकहर, लोक लोक आलोक ॥ २ ॥
राजत है दिनराजको, वंश अवनि अवतंश ।
जामें पुनि पुनि अवतरे, कंस मथन प्रभु अंश ॥ ३ ॥
महावीर ता बंश में, भयो एक अवनीश ।
लियो बिरद शीशौदिया, दियो ईशको शीश ॥ ४ ॥
ता कुलमें नृपवृन्द सब, उपजे बखत बिलन्द ।
भूमिपाल तिनमें भयो, बड़ो माल मकरन्द ॥ ५ ॥
सदा दान किरवान में, जाके आनन अम्भ ।
साह निजाम सखा भयो, दुर्ग्गदेव गिरिखम्भ ॥ ६ ॥
याते सरजा बिरद भो, शोभित सिंह प्रमान ।

रणभूसिला सु भौंसिला, आयुषमान खुमान ॥ ७ ॥
भूपणि भणि ताके भयो, भुव भूषण नृप साहि ।
रातो दिन शङ्कित रहैं, साहि सबै जगमाहिं ॥ ८ ॥

कवित्त–एते हाथी दिए भाल मकरन्दजूके नन्द, जेते गनि सकति विरश्चिहूकी न तिया । भूषण भनत जाकी साहिबी सभा के देखे, लागें और सब क्षितिपाल क्षिति में छिया ॥ साहस अगार हिन्दवानकी अधार धीर, सकल सिसौदिया सपूत कुल को दिया । जाहिर जहान भयो साहिजू खुमानबीर, साहिन को शरण सिपाहिनको तकिया ॥ ९ ॥

दो० । दशरथ के ज्यों राम भे, वसुदेव के गोपाल ।
सोई प्रगट्यो साहिके, श्रीशिवराज भुवाल ॥ १० ॥
उदित होत शिवराज के, मुदित भए द्विजदेव ।
कलियुग हट्यो मिट्यो सकल, म्लेच्छनिको अहमेव ॥ ११ ॥

कवित्त–जादिन जनम लीन्हों भूपर भूसिला भूप, ताही दिन जीत्यो अरि उरके उछाहकों । छठी छत्रपतिनकी जीत्यो भाग अनायास, जीत्यो नामकरणमें करन प्रवाहकों ॥ भूषण भणत बाललीला गढ़ कोट जीते, साहिके शिवाजी करि त्यहू चक चाहकों । गोलकुण्डा बीजापुर जीत्यो लरिकाइहीमें, ज्वानी आय जीत्यो दिल्लीपति पादशाहको ॥ १२ ॥

दो० । दक्षिण के सब दुर्ग जिति, दुर्ग साहइविलास ।
शिवसेवक शिवगढ़पति, कियो राजगढ़ वास ॥ १३ ॥

राजगढ़वर्णन ।

सवैया ॥

जापर शाह तनै शिवराज, सुरेशकी ऐसी सभा शुभ साजै ।
यों कवि भूषण जम्पतहै, लखि सम्पतिको अलकापति लाजै ॥
तामधि तीनिहुँ लोककी दीपति, ऐसो बड़ो गढ़राज बिराजै ।
वारि पतालसी माची मही, अमरावतिकी छवि ऊपर छाजै १४॥
हरिगीत०। मणिमयमहल शिवराजके, इमिराजगढ़में राजहीं ।
लखि यक्ष किन्नर सुर असुर, गन्धर्व्व हौसनि साजहीं ॥
उत्तङ्ग मरकत मन्दिरन मधि, बहु मृदङ्ग सु बाजहीं ।
घनसमरमानहुँघुमड़िकरिघन, घनपटलगलगाजहीं १५
मुक्तानिकी झालरनि मिलि, मणिलाल छज्जाछाजहीं ।
सन्ध्यासमय मानहुँ नखतगण, लाल अम्बर राजहीं ॥
जहँ तहां ऊरध उठे हीरा, किरन घन समुदाय हैं ।
मानो गगन तम्बू तन्यो, ताके सपेद तनाय हैं ॥ १६॥
भूषण भणत ज्यहि परसिकै, मणिपुष्परागनकी प्रभा ।
प्रभु पीतपट की प्रगट पावत, सिन्धु मेघनकी सभा ॥
सुख नागरिन के राजहीं कहुँ, फटिक महलन सङ्गमें ।
लसिअमलकोमलकमल, मानहुँगगनगङ्गतरङ्गमें ॥१७॥
आनन्दसों सुन्दरिनके कहुँ, इन्दुबदन उदोत हैं ।
नभसरितकेप्रफुलित कुमुदकुल, कमलविकसितहोतहैं ॥
कहुँ बावली सर कूप राजत, बद्धमणि सोपान है ।
जहँ हंस सारस चक्रवाक, बिहार करत गुमान है ॥१८॥

कितहूं विशाल प्रवाल जालनि, जटित अङ्गनभूमि है।
जहँललितबागनिद्रुमलतनि,मिलिरहेझिलिमिलिझूमिहै।
चम्पा चमेली चारु चन्दन, चारिहू दिशि देखिए।
लवली लवङ्ग इलानि केरे, लाखहों लगि लेखिए ॥१९॥
कहुँ केतकी कदली करौंदा, कुन्द अरु करवीर हैं।
कहुँ दाख दाड़िम सेव कटहर, तूत अरु जम्भीर हैं ॥
कितहूँ कदम्ब कदम्ब कहुँ, हिन्ताल ताल तमाल हैं।
पीयूष तें मीठे फले, कितहूं रसाल रसाल हैं ॥ २० ॥
पुन्नाग कहुँ कहुँ नागकेशरि, कितहुँ बकुल अशोक हैं।
कहुँ ललित अगर गुलाब पाटल, पटल बेलाथोक हैं ॥
कितहूँ निवारी माधवी, सिंगारहार कहूँ लसै।
जहँ भांति भांतिन रङ्गरङ्ग, विहङ्ग आनँदसों रसै ॥२१॥

छप्पय—लसत विहङ्गम बहुत, बहुत बहु भांति बाग महँ।
कोकिल कीर कपोत, केलि कलकल करन्त तहँ ॥
मञ्जुल महरि मयूर, चडुल चातक चकोरगन।
पियत मधुर मकरन्द, करत झङ्कार भृङ्ग घन ॥
भूषण सुबास फल फूलयुत, छहुँ ऋतु बसत बसन्त जहँ।
इमिराजदुर्ग्गराजतरुचिर, अतिसुखियाशिवराजकहँ २२॥

दो०। तहाँ राजधानी करी, जीति सकल तुरकान।
शिव सरजा रुचिदान मैं, कीनो सुयश जहान ॥२३॥
देशन देशन तें गुणी, आवत याचन ताहि।
तिनमें आयो एक कवि, भूषण कहियतु जाहि ॥२४॥
द्विज कनौजकुल कश्यपी, रत्नाकरसुत धीर।
बसत त्रिविक्रमपुर सदा, तरणि तनूजा तीर ॥ २५ ॥

शिवचरित्र लखि यों भयो, कवि भूषणके चित्त ।
भांति भांति भूषणनि सों, भूषित करौं कवित्त ॥ २६ ॥
सुकविनहूं की कृपा कछु, समुझि कविनको पन्थ ।
भूषण भूषणमय करत, शिवभूषणमय ग्रन्थ ॥ २७ ॥
कुल सुलङ्क चित्रकूटपति, साहस शील समुद्र ।
कवि भूषण पदवी दई, हृदयरामसुत रुद्र ॥ २८ ॥
भूषण सब भूषणनि में, उपमहि उत्तम चाहि ।
याते उपमहि आदि दै, वरणत सकल सराहि ॥ २९ ॥

शिवराजभूषण ।

दो० । भव्यसभा शिवराजकी रामदासगुरुराय ।
ठाढ़े यश वर्णन करे सो भूषण कविराय ॥

(उपमा-दोहा ।)

जहां दुहुनको देखिये, शोभा बनत समान ।
उपमा भूषण ताहिको, भूषण कहत सुजान ॥ १ ॥
जाको वर्णन कीजिये, सो उपमेय प्रमान ।
जाकी सरवर कीजिये, ताहि कहत उपमान ॥ २ ॥

(उदाहरण-कवित्त ।)

मिलतहीं कुरुप चकत्ताको निरखि कीन्ह्यो, सरजा सुरेश ज्यों उचित ब्रजराजको । भूषण कुमिस गैरमिसिल खरे कियेको, किए म्लेच्छ मुरछित करिकै गरानको ॥ औरते गुसलखाने बीचऐसे उमराय, लेचले मनाय महाराज शिवराजको । दावेदारको लखि

रिसानो दोहदलशाय, जैसे गड़दार ऐड़दार गजराजको ॥ १ ॥

सवैया—साइ मसिस्त सजोभनसो, औ दुशासनसो यशवन्त निहाख्यो । द्रोणसो भाऊ करन्न करन्नसो, और सबदल सौदल भाख्यो ॥ ताहि बिगोइ शिवा सरजा भनै, भूषण ऐलिफलै यों पछाख्यो । पारथके पुरुषारथ भारत, जैसे जगाय जयद्रथ माख्यो ॥२॥

कवित्त—आवतही दरबार बिलल्लाने छरीदार, जापता करनहार हारे तनमनके । भूषण भनत भौंसिलाके आगे आवतही, बाजे भये उमराय तेजक करनके ॥ साहिरह्योजकि, शिवसाहि रह्यो तकि, और चाहि रह्यो चकिबने ब्योंत अनबनको । ग्रीषमके भानुसो खुमानको प्रताप देखि, तारे सम तारे गये मूँदि तुरकानके ॥ ३ ॥

(अनन्वय—दोहा ।)

जहां करत उपमेयको, उपमेयै उपमान ।
ताहि अनन्वय कहत हैं भूषण सब मतिमान ॥ ३ ॥

(उदाहरण—सवैया ।)

साहितनै सरजा तुवद्वार, प्रतीदिन दानकि दुन्दुभि बाजै ।
भूषण भिक्षुक भीरनको, अति भोजहुते बढ़ि मौजनि साजै ॥
राजनको गजराजनिको गन, साहिनमें नहिंयो छबिछाजै ।
आजु गरीब निवाज महीपर, तोसों तुही शिवराज विराजै ॥ ४ ॥

(प्रतीप—दोहा ॥

जहँ प्रसिद्ध उपमानको, कवि बरणत उपमेय ।
तहँ प्रतीप उपमा कहत, भूषण गाथ प्रमेय ॥ ४ ॥

(उदाहरण—सवैया ।)

छाइरही जितही तितही, अतिही छबि छीरधि रङ्ग करारी ।
भूषण शुद्ध सुधानके सोधनि, सोधतसी धरि ओप उज्यारी ॥
यों तमतोमहिं चाबिकै चन्द, चहूंदिशि चांदनि चारु पसारी ।

ज्यों अफजल्लहिं मारि महीपर, कीरति श्रीशिवराज बगारी ॥ ५ ॥

दो० । जहँ बर्णत उपमेयते, हीनो करि उपमान ।

तासों कहै प्रतीप हैं, भूषण सुकवि सुजान ॥ ५ ॥

(उदाहरण–सवैया ।)

कुंदकहा पयबृन्द कहा अरु, चन्द कहा सरजा यश आगैं । भूषण भानु कृशानु कहा, व खुमानु प्रताप महीतल पागैं ॥ राम कहा द्विजराम कहा, बलराम कहा रणमें अनुरागैं । बाज कहा मृगराज कहा, अति साहसमें शिवराजके आगैं ॥ ६ ॥ यों शिवराजको राज अडोल, कियो शिवजो व कहां ध्रुव भू है । कामना दानि खुमान लखे न, कछू दिवबृक्ष न देवगऊ है । भूषण भूपनमें कुलभूषण भौंसिला भूपभरे सब भू है । मेरु कछू न कछू दिगदन्तिन, कुण्डलि कोल कछू न कछू है ॥ ७ ॥

(उपमेयोपमा–दोहा ।)

जहां परस्पर होत है, उपमेयो उपमान ।

भूषण उपमेयोपमा, ताहि बखानत जान ॥ ६ ॥

(उदाहरण–कवित्त ।)

तेरो तेज सरजा समर्थ दिनकरसों है, दिनकर सोहै तेरे तेज के निकरसों । भौंसिला भुवाल तेरा यश हिमकरसों है, हिमकर सोहै तेरे यशके अकरसों ॥ भूषण भणत तेरो हियो रतनाकर सों, रतनाकरौ है तेरे हिय सुखकरसों । साहिके सपूत शिवसाहि दानि तेरो कर, सुरतरुसो है, सुरतरु तेरे करसों ॥ ८ ॥

(मालोपमा–दोहा ।)

जहां एक उपमेयके, होत बहुत उपमान ।

ताहि कहत मालोपमा, भूषण सकल सुजान ॥ ७ ॥

(उदाहरण—कवित्त)

इन्द्र जिमि जम्भपर बाडव ज्यों अम्भपर, रावण सदम्भपर रघुकुलराज है। पवन वारिवाहपर, शम्भु रतिनाहपर, ज्योंसहस्रबाहुपर राम द्विजराज है॥ दावा द्रुमदण्डपर, चीता मृगझुण्डपर, भूषण वितुण्डपर जैसे मृगराज है। तेज तमअंशपर कान्ह जिमि कंसपर, त्यों मलेच्छवंशपर शेर शिवराज है॥९॥

(ललितोपमा—दोहा)

जहँ समताको दुहुनकी, लीलादिक पद होत।
ताहि कहत ललितोपमा, सकल कविनके गोत॥८॥

(उदाहरण दोहा)

बहसत निदरत हँसत जहँ, छबि अनुसरित बखानि।
शत्रु मित्र इमि औरऊ, लीलादिक पद जानि॥१०॥

कवित्त। साहितने सरजा शिवाकी सभा जामधि है, मेरुवारी सुरकी सभाकों निदरति है। भूषण भनत जाके एक एक सिखरतें, केतिक उदोत दिनकर के तरति है॥ जोन्हको हँसति ज्योति हीरमणिमन्दिरनि, कन्दरनिमें छबि कुहूकि उधरति है। ऐसो ऊँचो दुर्ग महाबली शिवाको जामे, नखतावली बिहसि दिपावली धरति है॥११॥

(रूपक दोहा)

जहां दुहुनको भेद नहिं बरणत सुकवि सुजान।
रूपक भूषण ताहिको, भूषण कहत प्रमान॥९॥

(उदाहरण—छप्पय)

कलियुग जलधि अपार, उद्ध-अधरम्मउर्म्मिमय।
लच्छनि लच्छ मलिच्छ, कच्छ अरु मच्छ मगरचय॥
नृपति नदीनदबृन्द, होत जाको मिलि नीरस।

भनि भूषण सब भुम्मि धरि, किन्निय सु अप्पबस ॥
हिन्दुवान पुण्यग्राहक वनिक, मुनिवाहक जयसाहिसुव ।
पतवार बिरद किरवानधरि, यशजहाज शिवराजतुव १२ ॥
साहिनमनसमरत्थ, जासु अवरङ्ग माहि सिरु ।
हृदै जासु अब्बास, साहि जाको बिलास थिरु ॥
ए दलसाहि कुतुब्ब, जासु भुजयुग भूषण भनि ।
पांय म्लेच्छ उमराय, काय तुरकान और गनि ॥
यह रूप अवनि अवतारधरि, जिहि जालिम जगदण्डियव ।
सरजा शिवसाहस खग्गगहि, कलियुगसोइखल खंडियव१३॥
कवित्त । सिंह धरि जाने बिन जावली जङ्गल भटी, हठी गज एदिल पठाइ करिभटक्यो । भूषण भनत देखि भभरि भगाने सब, हिम्मति हियेमें धरि काहुवै न हटक्यो ॥ साहिके शिवाजी गाजी सरजा समर्त्थ महामदगल अफजलै पंजाके बल पटक्यो । ता बिगरहे करि निकाम निजधाम कह, आकुत महाउत लै आंकुस लै सटक्यो ॥ १४ ॥

(रूपकभेद—दोहा)

घटि बढ़ि जहँ वर्णन करै, करिकै दुहुन अभेद ।
भूषण कवि औरो कहत, द्वै रूपकको भेद ॥ १० ॥

(उदाहरण—कवित्त)

साहितनै शिवराज भूषण सुयश तुव, बिगिर कलङ्क चन्द उर आनियतु है । एकही आनन पञ्चआनन गनत तोहि, गजानन बदन बिना बखानियतुहै ॥ एक शीसही सहसशीस कला करिबेको, दुहुंदृगसों सहसदृग मानियतु है । दुहुं करसों सहसकर मानियतु तोहि, दुहुं बांहसों सहसबाहुजानियतुहै॥१५॥
जेते हैं पहार भुवमध्य पारावार तिन सुनिकै अपार कृपा गहे

सुख फैल है। भूषण भनत साहितने सरजाके पास आइबेको बढ़ी उर हौसनकी एल है ॥ किरवान बज्रमों विपक्ष करिबेको डर आई है कितेको आए शरणकी गैल है। मघवा मही में आनि शिव ह्वै सेरहरवान, कोटि करि सकल सपक्ष किए शैल है ॥ १६ ॥

(परिणाम—दोहा)

जहँ अभेद करि दुहुँनसों, करत और सै काम।
भनि भूषण सब कहत है, तासु नाम परिणाम ॥ १६ ॥

(उदाहरण—सवैया)

भूषण तीषन तेज तरन्निसों, वैरिनकोकियो पानिप हीनों।
दारिददौंकरि वारिदसों दलि, त्यों धरणीतल शीतलकीनो ॥
भौंसिला भूपबली भुवकोभुज, भारी भुजङ्गमसों भरुलीनो।
साहितनैकुलचंदशिवा, जसचन्दसों चंदकियो छविछीनो१७

(उल्लेख—दोहा।)

कै बहुतै कै एक जहँ एक बस्तुको देखि।
बहुविधि कर उल्लेख है, सो उल्लेखि उल्लेखि ॥ १२ ॥

(उदाहरण--सवैया।)

एकै कहैं कल्पद्रुम है, इमि पूरतु है सबकी चित चाहै।
एकै कहैं अवतार मनोजको, यों तन मैं अति सुन्दरता है ॥
भूषण एकै कहै महिं इन्दु यों, राज बिराजत बाढ़यो मह्म है।
एकै कहैं नरसिंह है सङ्गर, एकै कहैं नरसिंह शिवा है ॥ १९ ॥

कवित्त—पैज प्रतिपाल भूमिभार को हमाल चहुँ, चक्र को अमाल भयो दण्डत जहानको। साहिनको साल भयो ज्वार को जवाल भयो, हरको कृपाल भयो हारके विधानको ॥ बीर

रस ख्याल शिवराज भुवपाल तुव, हाथको बिशाल भयो भूषण बखानको । तेरो करवाल भयो दक्षिणको ढाल भयो हिन्दकी दिवाल काल तुरकानको ॥ १९ ॥

(स्मृति--दोहा ।)

समशोभा लखि आन की, सुधि आवत ज्यहि ठौर ।
स्मृति भूषण तासों कहत, भूषण कवि शिरमौर ॥ १३ ॥

(उदाहरण--कवित्त ।)

तुम शिवराज बृजराज अवतार आजु, तुमही जगतकाज पोषत भरतहौ । तुम्हें छांड़ि यातें काहि बिनती सुनाऊं मैं ? तिहारे गुण गाऊं अब ढील क्यों धरतहौ ॥ भूषण भनत वह कुल में भयो न पर, गुनाहक छुदाए अब चिंत क्यों हरतहौ । और ब्राह्मणन देखि करत सुदामा सुधि, मोहिं देखि काहेसुधि भृगुकी करतहौ ॥ २० ॥

(भ्रम--दोहा ।)

आन बातको आन में, होत जहीं भ्रम आनि ।
तासों भ्रम सब कहतहैं, भूषण कविमत जानि ॥ १४ ॥

(उदाहरण--सवैया ।)

पीय पहारनि पास न जाहु यों, तीय बहादुरसों कह सोपै । कौन बचैहैं नवाब तुम्हैं, भनै भूषण भोसिला भूपके रोपै ॥ बन्दि कियो इहो साइस्तखां, यशवन्तसे भाउकरन्नसे दोषै । सिंह शिवाजीके बीरसो, गो अमीरनि बीचि गुणीजन घोषै ॥ २१ ॥

(सन्देह--दोहा ।)

कै यह कै वह यों जहां, होत आनि सन्देह ।
भूषण सो सन्देह है, यामें नहीं सँदेह ॥ १५ ॥

(उदाहरण—कवित्त ।)

आवत गुसलखाने ऐसे कछू त्यौर ठाने, जान्यो अवरङ्गज के प्राणनको लेवाहै । रसखोट भय एते अगोट आगे में साह चौकी नाकें आइ घर कीनी हद रेवाहै ॥ भूषण भनत यह चहूँ चक्क चाह कियो, पादशाह चकत्ता की छातीमहँ छेवा है । जान्यो न परतु ऐसे कामहै करत कोऊ, गन्धरब देवाहै कै सिद्ध है कि सेवाहै ॥ २२ ॥

(अपन्हुति दोहा ।)

आन बात आरोपिए, साँची बात दुराइ ।
शुद्ध अपन्हुति त्यहि कहत, भूषण सब कविराइ ॥ १६ ॥

(उदाहरण—कवित्त ।)

चमकती चपला न फिरत फिरङ्ग भट, इन्द्रको न चाप तरु बैरख समाजको । धाए धुरवान छाए धुरके पटलमेघ, गाजिबो न गाजिबो है दुन्दुभी दुवाजको ॥ भौंसिला के डरनि डरानी रिपुरानी कहै, पिय भजो देखि उदो पावसकी साजको । घन की घटा न गजघण्टनि सनाहं साजै, भूषण भनत आयो सेन शिवराज को ॥ २३ ॥

(हेत्वपन्हुति—दोहा ।)

जहां युक्तिसों आनको, कहिए आन छपाइ ।
हेतुअपन्हुति कहत हैं, तासों कवि समुदाइ ॥ १७ ॥

(उदाहरण—दोहा ।)

शिव सरजा के कर लसै, सो न होइ किरवान ।
भुज भुजगेश भुजङ्गिनी, भषति पौन अरि प्रान ॥ २४ ॥

(पर्यस्तापन्हुति—दोहा ।)

वस्तु गोइ ताको धरम, आन वस्तु में रोपि ।
पर्यस्तापन्हुति कहत, कवि भूषण मति ओपि ॥ १८ ॥

(उदाहरण-दोहा ।)

काल करत कलिकालमें, नहिं तुरकनको काल ।
काल करत तुरकानको, शिवसरजा-करवाल ॥ २५ ॥

(भ्रान्तापन्हुति-दोहा ।)

सङ्क आपनी होतही, जहँ भ्रमु कीजे दूरि ।
भ्रान्तापन्हुति कहत हैं तहँ भूषन कवि भूरि ॥ १९ ॥

(उदाहरण-कवित्त ।)

साहितनै सरजाके भयसों भगाने भूप, मेरुके लुकाने ते लहत जाइ ओक हैं । भूषण तहांऊ मरहठपतिके प्रतापपावत न कल अति कौतुक उदीत हैं ॥ शिव आयो शिव आयो सङ्करके आगमन, सुनिकै परान ज्यों लगत अरिगोत हैं। शिव सरजान यह सिव है महेश तव, यों के उपदेश यक्ष रक्षकसे होतहैं ॥ २६ ॥

सवैया । एकसमै सजिकै सब सैन, शिकार को आलमगीर सिधाए । आवतहे सरजा समस्यो, इकओरतें गोलनि बोल जताए ॥ भूषन भो भ्रमु औरङ्गके, सिव भौसिला भूपकी धाक धुकाए ।थाइके सिन्धु कह्यो समुझाइके, रौलनि आइ अचेत उठाए ॥ २७ ॥

(छेकापन्हुति-दोहा ।)

जहां औरकी सङ्क करि सांच छिपावत बात ॥
छेकापन्हुति कहत हैं, भूषन मतिअवदात ॥ २० ॥

(उदारण-दोहा)

तिमिर वंश हर अरुनकर, आयो सजनी भोर ॥
सिव सरजा चुपरहि सखी, सूरज सुर शिरमोर ॥ २८ ॥

(कैतवापन्हुति–दोहा ।)

जहं कैतवछलव्याजमिसि, इनसों होत दुराव ॥
कहतकैतवा पन्हुतिहि भूषन कवि सद्भाव ॥ २१ ॥

(उदाहरण–दोहा ।)

दुर्गवलय सरजा प्रबल, जन जीत्यो रणमांहि ॥
औरंग कहैं दिवानसों, सपन सुनावत ताहि ॥ २९ ॥
सुनि सु उजीरन यों कह्यो सरजा सिव महाराज ॥
भूषन कहि चकता सकुचि नहिं शिकार मृगराज ॥ ३०

कवित्त । साहिनकें शिक्षक सिपाहिनके पादशाह, संगरमें सिंहकैसे जिनके सुभाउहैं । भूषन भनत शिवसरजाकी धाकैं ते वे कांपत रहतचित गहत न चाउ है ॥ अफजलकी अगति सइस्तखांकी अपति बहलोलकी बिपतिसों डरे उमराव हैं । पक्को मतो करिकै मलेक्ष मनसब छोड़ि मकाहीके मिसि उतरत दरियाव है ॥ ३१ ॥

(उत्प्रेक्षा–दोहा ।)

आन बातको आनमैं, जहँ संभावन होइ ॥
वस्तु हेतु फलयुत कहत, उतप्रेक्षा है सोइ ॥ २२ ॥

(उदाहरण–सवैया ।)

दानव आयो दगा करि जावली, दीह भयारो महामद भार्यो । भूषन बाहुबली सरजाहिं सु भेंटिबेको निरशंक पधार्यो ॥ बीछूके घाय गिरे अफजल्लहि ऊपरहीं शिवराज निहार्यो । दाबि यों बैठ्यो नरिन्द अरिन्दहि, मानौ मयंद गयंद पछार्यो ॥ ३२ ॥ साहितनै शिवसाहि निशामैं, निशंक लियो गढ़सिंह सहानो । राठिवरोंको संहार भयो, भिरिकै सिरदार गिर्यो उदै भानो ॥ भूषन यों घमसान भो भूतल घेरत लोथनि मानौ महानौ । ऊंचे

सुछज्ज छता उछटी, प्रगटी परभा परभातकी जानो ॥ ३३ ॥

कवित्त । दुरजन-दार भाजि भजिवे सम्हार चढ़ी, उत्तर पहार डरि शिवजी नरिन्दतें। भूषन भनत विन भूषन वसन सने, भूषण पियासन है नाहनिके निन्दतें ॥ बालक अयानें बाट बीतही बिलानें कुम्हिलाने मुखकोमल अमल अरविन्दतें । हगजल कज्जल कलित बढ्यो मानो दूजो सोत श्रीतहै तरणि तनूजाको क-लिन्दतें ॥ ३४ ॥

दो० । महाराज शिवराज तुव, सुधाधवलधुवकित्त ॥
छविछटानिसों छुआतिसी, क्षिति अज्जन दिगभित्त ३५ ॥

कवित्त । छूट्यो खानदौरा जोरावर सफजङ्ग, अरु लूट्यो कारतलबखां मनहुँ अमाल है । भूषण भनत लूट्यो पूनामें सा-इस्तखान, गढ़ानमें छूट्यो त्यों गढ़ा इनकी जाल है ॥ हेरि हेरि कूटि सलहेरि बीच सरदार, घेरि घेरि लूट्यो सब कटक कराल है मानों हय हाथी उमराव करि साथी, औरङ्ग डरि शिवजीपैभेजत रसाल है ॥ ३६ ॥

दो० । हुवन सदन सबके बदन, शिव शिव आठो याम ॥
निज बचिबेको जपत जनु, तुरकौ हरको नाम ॥ ३७ ॥

दो० । मानो इत्यादिक वचन, आवत नाहिं जिहिं ठौर ॥
उतप्रेक्षा गनि गुपतिसो, भूषण भनत अमौर ॥ ३८ ॥

(उदाहरण-कवित्त ।)

देखत उँचाई उदरीत पाग सूधी राह, घोपहूमें चढ़ते जे साहस निकेत है । शिवाजी हुकुम तेरो पाइ पैदल निसल, हेरि परनाले सेहू जीते जनु खेत है ॥ सावन भदौंही भारी कुहूकी अँध्यारी चढ़ि, दुरगपर जात मावलावल सचेत है । भूषण भनत ताकी बात नैं बिचारी तेरे, परताप रविकी उज्यारी गढ़ लेतहै ॥ ३९ ॥

दो०। और गढ़ोई नदी नद, शिवगढ़पाल दन्याव।
दौरि दौरि चहुँ ओरते, मिलत आनि यह भाव ॥ २३॥

(रूपकातिशयोक्ति—दोहा।)

ज्ञान करत उपमेयको, जहँ केवल उपमान।
रूपकातिशय उक्ति तहँ भूषण कहत सुजान ॥ २४॥

(उदाहरण—कवित्त।)

बासवसे बिसरत बिक्रमकी कहा चली, बिक्रम लखत बीर बखत बिलन्दके। जाके तेजवृन्द शिवा जी नरिंद मकरन्द, भालमकरन्द कुलचन्द साहिनन्दके॥ भूषण भनत जाके बैरी बनितान नैन होत अचरिज घर घर दुखद्वन्दके। कनकलतानि इन्दु इन्दुनिमें अरविन्द झरैं अरविन्दनितैं बुन्द मकरन्दके ॥ ४० ॥

(भेदकातिशयोक्ति—दोहा।)

जहँ तहँ आनहिं भाँतिके, बरणे बात कछूक।
भेदकातिशयउक्ति सो, भूषण कहत अचूक ॥ २५ ॥

(उदाहरण—कवित्त।)

श्रीनगर नयपाल जुमिलाके छितपाल, भेजत रसाल चौर गूढ़ कही बाजकी। मेवार ढूँढ़ा मारवार और बुंदेलखण्ड, झारखण्ड बांधो धनी चाकरी इलाजकी॥ भूषण जे पूरब पछांह नरनाह ते वै ताकत पनाह दिल्लीपति शिरताजकी। जगतको जेतवार जीत्यो अवरंगजेब न्यारी रीति भूतल निहारी शिवराजकी ॥४१।

(अक्रमातिशयोक्ति—दोहा।)

जहां हेतु अरु काज मिलि, होत एकही साथ।
अक्रमातिशयउक्ति सो, कहि भूषण कविनाथ ॥ २६ ॥

(उदाहरण—कवित्त।)

उद्धत अपार तुव दुन्दुभी धुकार साथ, लङ्घे पारावार वृन्द बैरी बालकनके। तेरे चतुरङ्गके तुरङ्गनके रङ्गे रज, साथही उड़ात रज

पुजहै पलनके ॥ दक्षिणके नाथ शिवराज तेरे हाथ चढ़े धनुषके साथ गढ़ कोट दुरजनके। भूषण अशीषें तोहिं करत कसीसें पुनि बाणनके साथ छूटें प्राण तुरकनके ॥ ४२ ॥

(चञ्चलातिशयोक्ति—दोहा।)

जहां हेतु चरचाहिमें, काज होत तत्काल।
चञ्चलातिशयोक्ति सो, भूषण कहत रसाल ॥ २७ ॥

(उदाहरण—दोहा।)

आयो आयो सुनतहीं, शिव सरजा तुव नांव।
बैरिनारिदृगजलनिसों, बूड़िजात अरिगांव ॥ २७ ॥

(अत्यन्तातिशयोक्ति—दोहा।)

जहां हेतुते प्रथमहीं, प्रगट होतहै काज।
अत्यन्तातिशयोक्ति सो, कहि भूषण कविराज ॥ २८ ॥

(उदाहरण—कवित्त।)

भञ्जनमनोरथके प्रथमहीं दानी तोहिं, कामतरु कामधेनुसों गनाइयतु है। याते तेरे गुण सब गाइको सकतु कवि, बुद्धिअनुसार तऊ कछु गाइयतु है ॥ भूषण कहै यों साहितनै शिवराज निज बखत बढ़ाइ करि तोहिं ध्याइयतु है। दीनताको डारि औ अधीनता विडारि दीह, दारिदको मारि तेरे द्वार आइयतु है।

दो०। कवि तरुवर शिव सुयश सर, सींचे अबरज मूल।
सुफल होत है प्रथमहीं, पाछे प्रगटै फूल ॥ ४५ ॥

(सामान्यविशेष—दोहा।)

कहिबे जहँ सामान्य है, कहैं तहां जु विशेष।
सो सामान्यविशेष है, बरणत सुकवि अशेष ॥ २९ ॥

(उदाहरण—दोहा।)

और नृपतिं भूषण कहैं, करैं न सुगमो काज।
साह तनै शिव सुयश तौ, करै कठिनहू काज ॥ ४६ ॥

(तुल्ययोगिता—दोहा ।)

तुल्ययोगिता धरम जहँ, बरणनको है एक ।
कहूँ अबर्णनको कहत, भूषण सुकवि विवेक ॥ ३० ॥

(उदाहरण—कवित्त ।)

चढ़त तुरङ्ग चतुरङ्ग साजि शिवराज, चढ़त प्रताप दिनकर अति जङ्गमें । भूषण चढ़त मरहट्टनिके चित्त चाव, खड्ग खुलि चढ़त है अरिनके अङ्गमें ॥ भौंसिलाके साथ गढ़ कोट है चढ़त, अरिजोट है चढ़त एक मेरुगिरिशृङ्गमें । तुरकानगन व्योमजान है चढ़त बिनमान है चढ़त बदरङ्ग में ॥ ४७ ॥

दो० । शिव सरजा भारी भुजनि, भुवपर भयो सुभाग ।
भूषण अब निहचिन्त हैं, शेषनाग दिगनाग ॥ ४८ ॥

(दीपक दोहा)

बर्ण्य अबर्ण्यनको धरमु, जहँ बरणतहैं एक ।
ताको दीपक कहत हैं, भाषत सुकवि विवेक ॥ ३१ ॥

(उदाहरण—सवैया)

कामिनि कंतसों यामिनि चंदसों, दामिनि पावस मेघ घटा-सों । कीरति दानसों सूरति ज्ञानसों प्रीति बड़ी सनमान महा-सों ॥ भूषण भूषणसों तरुणी, नलिनी नव पूषण देव प्रभासों । जाहिर चारिहू ओर जहान लसै हिंदुवान खुमान सिवासों ॥ ४९ ॥

(आवृत्तदीपक—दोहा ।)

दीपकपदके अर्थ जहँ, फिरि फिरि करत बखान ।
आवृत्तदीपक कहत हैं, भूषणकविमत जान ॥ ३२ ॥

(उदाहरण—कवित्त ।)

अटल रहे हैं दिग्ग अंतनिके भूपधरि, रैयतिको रूप निज देश पेश करिकै । राना रह्यो अटल बहाना करि चाकरीको, बाना

तजि भूषण अनन्त गुण भरिकै । हाड़ा राठौर औ कच्छवाह गौर और रहे, अटल चकत्ताको चमाऊ धरि डरिकै । अटल शिवाजी रह्यो दिल्लीको निदरि धीर, धरि ऐंड धरि तेग धरि गढ़ धरिकै ॥ ५०॥

सवैया—मद जलधरन द्विरदबल लागत, बहु जलधरन जलद छबि साजई । भूमिधरन फनपति बिलसत अति, तेजधरन ग्रीषम रवि छाजई ॥ खग्गधरन सोभा तहँ राचत, रुचि भूषण गुणधरन सभा जई । दिल्लिदलन दक्षिनदिसि थँभन, ऐंडधरन शिवराज बिराजई ॥ ५१ ॥

(प्रतिवस्तूपमा—दोहा ।)

वाक्यनको युग होत जहँ, एकै अर्थ समान ।
जुदो जुदो करि भाषिये, प्रतिवस्तुपमा जान ॥ ३३ ॥

(उदाहरण—सवैया ।)

देत तुरी गुणगीत सुने बिनु, देत करी गुणगीत सुनाये । भूषण भावत भूप न आन, जहान खुमानकी कीरति गाये ॥ मंगनकों सुवपाल घने पै, निहाल करै शिवराज रिझाये । और रितै नरसैं सरसैं पै, बढ़ै नदिया नद पावस आये ॥ ५२ ॥

(दृष्टान्त—दोहा ।)

पदसमूह युग अर्थ जहँ, प्रतिबिम्बितसो होत ।
ताहि कहत दृष्टान्त है, भूषण सुमति उदोत ॥ ३४ ॥

(उदाहरण दोहा)

शिव औरङ्गहि जिति सकै, और न राजा राउ ।
हत्थिमत्थपर सिंहबिनु, और न घालै घाउ ॥ ५३ ॥
चाहत निरगुण सगुणको, ज्ञानवन्त गुणधीर ।
यही भाँति निरगुण गुनिहिं, शिवा निवाजत बीर ॥ ५४ ॥

(निदर्शना—दोहा ।)

सदृश वाक्य युग अरथको, करिये एक अरोप ।

भूषण ताहि निदर्शना, कहत बुद्धिदै ओप ॥ ३५ ॥

(उदाहरण—सवैया ।)

मच्छहु कच्छमें कोल नृसिंहमें, वामनमें भनि भूषण जो है। जो प्रसराममें, जो रघुराममें जो व कह्यो बलिराम हु कोहै ॥ बौधमै जो अरु जो कलकी महँ, विक्रम होवेको आगे सुनोहै। साहस भूमि अधार सोई अब, श्रीसरजा शिवराज में सोहै ॥ ५५ ॥

दो० । औरनिको जो जनमु है, सो जाको एक रोज ।
औरनिको जो राज सो, शिव सरजाकी मौज ॥ ५६ ।
साहिनसों रन माँड़िकै, कीनो सुकवि निहाल ।
शिव सरजाको ख्याल है, औरनिको जञ्जाल ॥ ५७ ॥

(व्यतिरेक—दोहा ।)

सम छवि वाले दुहुनिमैं, जहँ बरणत यदि एक ।
भूषण कवि कोविद सकल, ताहि कहत वितरेक ॥ ३६ ॥

(उदाहरण—छप्पय ।)

त्रिभुवनमें परसिद्ध यक्क, अरिबल वह खण्डिय ।
यहि अनेक अरिबल, बिहण्डि रणमण्डल मण्डिय ॥
भूषण वह रितु यक्क, पुहुमि पानिपहि बढ़ावत ।
यह छहु ऋतु निशदिन, अपार पानिप अधिकावत ॥
शिवराज साहिसुव सत्थ नित, लक्ख हत्थि हय लक्ख रइ ।
यक्कहि गयन्द यक्कहि तुरंग, किमि सुरेन्द्र सरिवर करइ ५८ ॥

(सहोक्ति—दोहा ।)

वस्तुनिको भासत जहां, जनरञ्जन सह भाय ।
तहां सहोकति कहत हैं, कविकोविद समुदाय ॥ ३७ ॥

(उदाहरण-कवित्त ।)

छूटत उलास आमखास एक संग छूटे, हरम सरम एक संग

बिनु दङ्गही। नैननते नीर छूटे धीर छूटे एकसङ्ग, छूटे सुख सुख-रुचि त्योंहीं बिनु रङ्गही॥ भूषण बखाने शिवराज मरदाने तेरे, धाक बिलला ते न गहत बल अङ्गही। दक्षिणका सूबा पाइ दिल्ली के अमीर तजे, उत्तरकी आस जीव आस एक सङ्गही॥ ५९॥

(बिनोक्ति—दोहा।)

प्रस्तुत जहं कछु बात बिनु, हेतु वर्ण्यको होइ।
ताहि कहत बिनु उक्ति है, भूषण कविमत जोइ॥ ३८॥

(उदाहरण—सवैया।)

को कबिराज बिभूषण होत, बिना कबि साहितनेको कहाये।
को कबिराज सभाजित होत, सभा सरजाके बिना गुन गाये॥
को कबिराज भुवालनि भावतु, भौंसिलाके मनमें बिन भाये।
को कबिराज चढ़े गजराज, शिवाजीकी मौज मही बिनु पाये॥६०॥

दो०। शोभमान पर जग किए, सरजा सिवा खुमान।
साहिनसों बिनड़र अगड, बिन गुमानको दान॥ ६१॥

(समासोक्ति दोहा।)

बर्णन कीजै आनको, ज्ञान आन को होय।
समासोक्ति भूषण कहत, कबिभूषण सबकोय॥ ३९॥

(उदाहरण दोहा।)

बड़ो डील लखि पीलको, सबनि तज्यो बनथान।
धनि सरजा तू जगतमें, ताको हर्यौ गुमान॥ ६२॥
तुहीं सांच द्विजराज है, तेरी कला प्रमान।
तोपर शिव किरपा करी, जान्यो सकल जहान॥ ६३॥

(परिकर और परिकरांकुर दोहा।)

साभिप्राय विशेषणनि, भूषण परिकर जानि।
साभिप्राय विशेषते, परिकर अंकुर मानि॥ ४०॥

(उदाहरण—कवित्त ।)

बचैगा न समुहाने बहलोलखाँ अयाने, भूषण बखानैं दिल आनि मेरा बरजा। तुजते सवाई तेरा भाई सलहेर पास, कैदी किया साथका न कोई बीर गरजा॥ साहिनको साहसी औरँगहू के लीने गढ़, जिसका तू चाकर औ जिसकीहै परजा। साहि का ललन अफजलका मलन, दिल्लीदलका दलन शिराज आया सरजा॥ ६४॥

दो०। शूरसिरोमणि शूरकुल, भूषण शिव मकरन्द।
क्यों करिकै औरँग जितै, कुल मलेक्षकुलचन्द॥ ६५॥
भूषण भनि सबही तबहिं, जीत्योहो जुरि जङ्ग।
क्यों जीततु शिवराजसों, अब अन्धक अवरङ्ग॥ ६६॥

(श्लेष—दोहा।)

एक बचनमें होत जहँ, बहु अर्थनिको ज्ञान।
श्लेष कहत हैं ताहिको, भूषण सकल सुजान॥ ४१॥

(उदाहरण—कवित्त।)

सीता सङ्ग सोहति लक्ष्मण सहाइ जाको, भूपर भरत नाम भाई नीति चारु है। भूषण भनत कुलि शूरकुल भूषण में, दासरथी सब जाके भुज भुव भारु है॥ अरि लंक तोर जोर जाके साथ बानर हैं, सिन्धु रहै बाँधे जाके दलको न पारु है। ते गहिकै भेट जौन राकस मरद जान्यो, सरजा शिवाजी रामहीका अवतारु है॥ ६७॥ देखत सरूप को सिहात ना मिलन काज, जग जीतिबेको जामें रीति कल बलकी। जाके पास आवै ताहि निधर करत बेगि भूषण भनत जाकी सङ्गति न फलकी। कीरति कामिनी राच्यो सरजा शिवाको एक, बसकै सकै न बस करणी सकलकी। चञ्चल सरस एक काहूपै न रहै दारी, तिनुका समान सूबादारी दिल्लीदलकी॥

(अप्रस्तुतप्रशंसा—दोहा ।)

प्रस्तुति लीन्हे होइ जहँ, अप्रस्तुतपरशंश ।
अप्रस्तुतपरशंश सो कहत सुकवि अवतंश ॥ ४२ ॥

(उदाहरण दोहा ।)

हिन्दुनिसों तुरकिनि कहै, तुमको सदा सँतोसु ।
नाहिन तिहारे पतिन पर, सिव सरजाको रोसु ॥ ५९ ॥
आरनिय भिल्लिनिसों कहै, घन बन जाइ यकन्त ।
शिव सरजासों बैर नहिं सुखी तिहारे कन्त ॥ ६० ॥

(पर्यायोक्ति—दोहा ।)

बचननकी रचना जहा, बर्णनीय पर जानि ।
परजायोकति कहत हैं, भूषण ताहि बखानि ॥ ४३ ॥

(उदाहरण—कवित्त ।)

महाराज शिवराज तेरे बैर पेखियतु-घर बन ह्वैहै हरम हद सीनके । भूषण भनत रामनगर जुँवारगर, तेरे बैर बह बहे स-धिरनदीनके ॥ सरजा समत्थ बीर तेरे बैर बीजापूर, बैरी बैयरनि कर चीन्ह न चुरीनके । तेरे बैर देखियतु आगेर दिल्लीमें बिनु सिन्दुरके बिन्दु सुखइन्दु यवनीनके ॥ ७१ ॥

(व्याजस्तुति—दोहा)

निन्दामें अस्तुति कढ़ति, स्तुतिमें निन्दा होइ ।
व्याजस्तुति तासों कहत, भूषण कवि सब कोइ ॥ ४४ ॥

(उदाहरण—कवित्त)

पीरी पीरी ह्वै तुम देतहो मँगाय हमैं, सुवरण हमसों परखि करि लेतहो । एक पलही में लाखें रूखनि सों लेत लोग, तुम राजा ह्वैके लाखें देवेको सचेतहो ॥ भूषण भनै यों महाराज शिवराज बड़े, दानी दुनी ऊपर कहाए कौन हेतहो । रीझि

हँसि हाथी हमें सब कोऊ देत, कहा रीझिकर हाथी एक तुमहीं तो देतहौ ॥ ७२ ॥ तूतो रात्यो दिन जग जागत रहत वोऊ, जागत रहत रात्यो दिन बरणत हैं। भूषण भनत तू बिराजै रज-भरयो ओऊ, रज भरे देहनि दरीमें बिचरत हैं ॥ तू शूरगणको बिदारि बिहरत वो शूरमण्डलै बिदारि सुरलोक बिहरत हैं। काहे ने शिवाजी गाजी तेरोई सुयश होत, तोसों अरिबर सरिवरसी करत हैं ॥ ७३ ॥

(आक्षेप–दोहा ।)

पहिले कहिए बात कछु, तासों पुनि प्रतिषेध ।
ताहि कहत आक्षेप हैं, भूषण सुकवि सुमेध ॥ ४५ ॥

(उदाहरण–सवैया ।)

जाइ भिरो न भिरे बचिहौ, भनैं भूषण भौंसिला भूप शिवासों। जाइ दुर्गन दुरौ दबि यों, तजिकै दरिया उलँघो लघुतासों ॥ शीक्षनकाज वजीरनको, कहे बोल यों ए दिलसाहि सभासों। छूटिगयो तो गयो परनालो, सलाहकीराह गहौ सरजासों॥७४॥

(विरोध–दोहा ।)

द्रव्यक्रिया गुणमें जहां, उपजत काज विरोध ।
तासों कहत विरोध हैं, भूषण सुकवि सुबोध ॥ ४६ ॥

(उदाहरण–सवैया ।)

श्रीसरजा शिव तो यश सेतुसों, होतहैं साहिनके मुखकारे। भूषण तेरे अरुन प्रताप, सपेद लखे कुनरा नृप सारे ॥ साहि तनै सुखकोप अगिन्नसों, बैरी जरैं सब पानि पँवारे। एक अच-म्भव होत बड़ो, तिन ओट गहे अरि जात न जारे ॥ ७५ ॥

(विरोधाभास–दोहा ।)

जहँ विरोध सो जानिए, सांच विरोध न होइ ।
ताहि विरोधाभास कहि, बरणतहैं सब कोइ ॥ ४७ ॥

(उदाहरण—सवैया ।)

दक्षिणनायक एक तुहीं, भुव भामिनिको अनुकूल है भावै। दीनदयाल न तोसों दुनी, अरु म्लेक्षके दीनहिं मारि मिटावै॥ श्रीशिवराज भनै कवि भूषण, तेरे स्वरूपहि कोउ न पावै। शूर के वंशमें शूर शिरोमणि, ह्वैकरि तू कुलचन्द कहावै॥ ७६॥

(विभावना—दोहा ।)

भयो काज विन हेतहूं, वरणै हैं ज्यहिं ठौर।
तहँ विभावना होतहै, भाषत कवि शिरमौर॥ ४८॥

(उदाहरण—सवैया ।)

वीर बड़े बड़े मीर पठान, खरो रजपूतन को गण भारो। भूषण आइ तहां शिवराज, लियो हरि औरङ्गजेबको गारो॥ दीनो कुज्वाब दिलीपतिको, अरु कीनो वजीरनको मुँहकारो। नायो न माथहि दक्षिणनाथ, न साथमें सेन न हाथ हथ्यारो॥७७॥

दो०। साहितनै शिवराजकी, सहज टेव यह ऐन।
अनरीझे दारिद हरै, अनखीझे अरि सैन॥ ७८॥

(द्वितीयविभावना—दोहा)

जहां प्रगट भूषण भनत, हेतु काज ते होइ।
सो विभावना औरऊ, कहत सयाने लोइ॥ ४९॥

(उदाहरण—दोहा ।)

अचिरज भूषण बढ़्यो, श्रीशिवराज खुमान।
तुव कृपाण ध्रुव धूमतें, भयो प्रताप कृशान॥ ७९॥

(असम्भव—दोहा ।)

अनहोवे की बात कछु, प्रगट भई सो जानि।
जहां असम्भव वरणिये, सोई नाम बखानि॥ ५०॥

(उदाहरण—कवित्त ।)

जसनके रोज यों जलूस गहि बैठ्यो जीस, इन्द्र आवें सोऊ

लागे औरङ्गकी परजा। भूषण भनत तहँ गरज्यो शिवाजी गाजी, जिनको तुजक देखि को न हिए लरजा॥ ठान्यो ना सलाम मान्यो साहिको इलाम धूम, धामकैं न मान्यो राम सिंहहूको बरजा। जासों पेंड़कारि भूप बचे न दिगन्त ताके-दन्त तोरि तखत तरेते आयो सरजा॥ ८०॥

दो०। औरङ्ग यों पछताय मन, करतो यतन अनेक।
सिवा लेइगो दुरग सब, को जानै निशि एक॥ ८१॥

(असङ्गति-दोहा।)

हेतु अनतहीं होत जहँ, काजु अनतहीं होइ।
ताहि असङ्गति कहत हैं, भूषण सुमति समोइ॥ ५१॥

(उदाहरण-कवित्त।)

महाराज शिवराज चढ़त तुरङ्गपर, ग्रीवा जात नैकर गनीम अति बलकी। भूषण चलत सरजाकी सेन भूमिपर, छाती दरा-कति खरीसु अखिल खलकी॥ कियो दौरि घाउ अमीरन उमराव पर, गई कटि नाक सगरेई दिलीदलकी। सूरतिजराइ कीनो दाहु पादशाह उर, स्याही जाय सब पादशाही मुख झलकी॥८२॥

(विषम-दोहा।)

कहाँ बात यह कहां वह, यों जब करत बखान।
ताहि विषम भूषण कहत, भूषण सुकवि सुजान॥५२॥

(उदाहरण-सवैया।)

जावलि वार सिंगारपुरी, औ जवारिको रामके नैरिको गाजी। भूषण भौंसिला भूपतिने, सब मारि यों दूरि किए जिमि पाजी॥ बैर कियो सरजा सों खवासखां, क्यों उर सैन बिजैपुर बाजी। बापुरो एदिलसाहि कहां कहां, दिलीको दावनगीर शिवाजी॥८३॥

लै परनाली सिवा सरजा, करनाटकलौं सब देश बिगूचे। बैरि-

नके भगे बालकवृन्द, भनैं कवि भूषण दूरि पहूंचे ॥ नांघत नांघत घोर घने, बन हारि परे यों कटे मनों कूंचे । राजकुमार कहां सुकुमारकहां बिकरार पहार वे ऊंचे ॥ ८४ ॥

(सम-दोहा ।)

जहां दुहूं अनुरूपको, करिये उचित बखान ।
भूषन सम तासों कहत, भूषन सकल सुजान ॥५३॥

(उदाहरण-सवैया ।)

पंजहजारिन बीच खरा किय, मैं उसका कुछ भेद न पायो। भूषण यों कहि औरंगजेब, वजीरनिसों मुहसाह रिसायो ॥ कम्मरकी न कटारि दई, इसलामनें गोसलखां न बचायो । जोर सिवा करता अनरत्थ, भलीहुई हत्थ हथ्यारनआयो॥८५॥

दो०। कछु न भयो केतो लख्यो हारयो सकल सिपाह ।
भलो करै शिवराजसों, औरङ्ग करै सलाह ॥ ८६ ॥

(विचित्र-दोहा ।)

जहां कहत है यतन फल, चित चाहि बिपरीत ।
भूषन ताहि बिचित्र कहि, बरणत सुकबि सुप्रीत ॥ ५४ ॥

(उदाहरण-दोहा ।)

तैं जैसिंहहि गढ़ दए, सिवसरजा यश हेत ।
लीन्हे कैयो बरसमें, बार न लागी देत ॥ ८७ ॥

(प्रहर्षण-दोहा ।)

जहँ मनवाञ्छित अर्थ तें, प्रापति कछु अधिकाइ ।
ताहि प्रहर्षण कहतहैं, भूषण जे कबिराइ ॥ ५५ ॥

(उदाहरण-कवित्त ।)

साहितने सरजाकी कीरतिसों चारिउ ओर, चांदनी बितान छिति छोर छाइयतु है, भूषण भनत ऐसो भूपति भोंसिला को है, जाके द्वार भिक्षुक सदाई भाइयतु है ॥ महादानी शिवाजी

खुमानजी जहानपर, दानके भसान जाके यों गनाइयतु है। रजकी हौस किए हेम पाइयतु जासों, हयनिकी हौस किये हाथी पाइयतु है ॥ ८८ ॥

(विषादन—दोहा ।)

जहं चितु चाहे अरथको, उपजै काज बिरुद्ध ।
ताहि बिषादन कहत हैं, भूषण बुद्ध बिसुद्ध ॥ ५६ ॥

(उदाहरण—सवैया ।)

दारहि मारि मुरादकों बाँधिकै, संगर साह सुजा बिचलाए। भूषणके बसि दिल्लिकि दौलति, औरउ देश घने अपनाए ॥ बैर कियो सरजा शिवसों यक, औरँगके न भये मनभाऐं। फौज पठाई हुती गढ़ लेनको, गांठिहुके गढ़ कोट गँवाए ॥ ८९ ॥

दो० । महाराज शिवराज तुव, बैरी तजि रसरुद्र ।
बचिबेको सागर तरे, बूड़े शोकसमुद्र ॥ ९० ॥

(अधिक—दोहा ।)

जहां बड़े आधार ते, बरणत बढ़ि आधेय ।
ताहि अधिक भूषण कहत, जानि सुगाह प्रमेह ॥ ५८॥

(उदाहरण—दोहा)

शिव सरजा तुव हाथको, नहिं बखान करि जान ।
जाको बासी सुयसु सब, त्रिभुवनमें न समान ॥ ९१ ॥

(अन्योन्या—दोहा ।)

अन्योन्या उपकार जहँ, यह वर्णन ठहराइ ।
ताहि अन्योन्या कहत हैं, अलङ्कार कविराइ ॥ ५८ ॥

(उदाहरण—सवैया ।)

तो करसों क्षिति छाजत दान है, दानहुसों अति तो कर छाजै । तैहिं गुणीकी बढ़ाई सजे अरु, तेरि बढ़ाई गुणी सबसाजे ॥

भूषण तोहिंसों राजु राजसों तैं शिवराज विराजै। तो बलसों गढ़कोट गजे अरु तू गढ़कोटनिके बल गाजै॥ ९२॥

(विशेष-दोहा।)

बरणत है आधेयको, जस विनु हूं आधार।
ताहि विशेष बखानहीं, भूषण कविसिरदार॥ ५९॥

(उदाहरण—दोहा।)

शिव सरजासों जङ्ग जुरि, चन्द्रावत रजवन्त।
राउ अमरगो अमरपुर, समर रह्यौ रजवन्त॥

(व्याघात-दोहा)

और काज करता जहां, करै औरही काज।
ताहि कहत व्याघात है, भूषण कवि शिवराज॥ ६०॥

(उदाहरण-सवैया।)

ब्रह्म रचै पुरुषोत्तम पोषत, शङ्कर सृष्टि सँहारनहारे। तू हरिको अवतार शिवा, नृपकाज सँवारै सबै हरिवारे॥ भूषण यों अवनी यवनी कहैं, कोउ कहै सरजासों हहारे। तू सबको प्रतिपालनहार, बिचारे भ्रतार न मारि हमारे॥ ९४॥

(गुम्फ-दोहा।)

पूरब पूरब हेतु के, उत्तर उत्तर हेत।
या विधि धारा बरण कवि, गुम्फ कहत बानेत॥ ६१॥

(उदाहरण-सवैया।)

शङ्करकी किरपा सरजापर जोर बढ़ी कवि भूषन गाई। तो किरपासों सुबुद्धि बढ़ी भुव, भौंसिला साहितनैकी सवाई॥ रोज सुबुद्धिसों दान बढ़्यो, अरु दानसों पुण्यसमूह सदाई। पुण्यसों बाढ़्यो शिवाजि खुमान, खुमानसों बाढ़ि जहान भलाई॥ ९५॥

दो०। सुयश दान अरु दान धन, धन उपजै किरवान।
सो जगमें जाहिर करी, सरजा शिवा खुमान॥ ९६॥

(एकावली-दोहा ।)

प्रथम बरणि जहँ छोड़िये, जहां अरथकी पांति ।
बरणत एकावलि अहै, कवि भूषण इहि भांति ॥ ६२ ॥

(उदाहरण-हरिगीत ।)

तिहुँ भुवनमें भूषण भनै, नरलोक पुण्य सु साजमें । नरलोकमें तीरथ लसै, महि तीरथोंकि समाजमें ॥ महिमा बड़ी महिमें भली, महिमें महारज लाजमें । रजलाज राजति आजु है, महराज श्रीशिवराजमें ॥ ९७ ॥

(मालदीपक और सार दोहा ।)

दीपक एकावलि मिले, मालादीपक होइ ।
उत्तर उत्तर उतकरष, सार कहतहैं सोइ ॥ ६३ ॥

(उदाहरण दीपकको-कवित्त ।)

मन कवि भूषणको शिवकी भगति जीत्यो, शिवकी भगत जीति साधु जन सयाने । साधुजन जीते या कठिन कलिकाल कलिकाल जीते महावीर राजनि महिमाने ॥ जगतमें जीते महावीर महाराजनिते, महाराज बावनहू पादसाहि लेवाने । पादसाहि बावनौ दिल्लीके पादसाहि, दिल्लीपादसाहि हिन्दुपति पादसाहि शिवाने ॥ ९८ ॥

(उदाहरण सारको-सवैया)

आदि बड़ी रचना है विरञ्चिकी, जामे रच्यो रचि जीव जड़ो है । ता रचनामें सुजीव बड़ो अति, काहेते ता उर ज्ञान गड़ो है ॥ जीवनिमें नरलोग बड़ो, कवि भूषण भाषत पैज अड़ो है । है नरलोगमें राज बड़े, सब राजनिमें शिवराज बड़ो है ॥ ९९ ॥

(यथासंख्य-दोहा ।)

क्रमसों कहि तिनके अरथ, क्रमसों बहुरि मिलाइ ।

यथासंख्य तासों कहत, भूषण जे कविराज ॥ ६४ ॥

(उदाहरण—कवित्त ।)

जेई चहौ तेई गहौ सरजा शिवाजी देश, सवे दले दुवन हते जे चढ़े उरके । भूषण भनत भौंसिला सों अब सनमुख, काऊ ना लरैया है धरैया धीर धुरके ॥ अफजलखान रूसमें जमान फतेखान, कूटे लूटे जूटे ज वजीर बीजापुरके । अमर सुजान मोहकम बहलोलखान, खांडे छांड़ डाडे उमराय दिल्लीपुरके ॥ १०० ॥

(पर्याय—दोहा ।)

जहां अनेकनिमें रहै, अस्थिर ह्वैकरि एक ।
ताहि कहत परयाय है, भूषण सुकवि विवेक ॥ ६५ ॥

(उदाहरण—दोहा ।)

जीति रही अवरङ्गमें, सबै छत्रपति छांडि ।
तजि ताहूको अब रही, शिव सरजा कर मांडि ॥ १०१ ॥

कवित्त—कोट गढ़ दैके माल मुलकमें बीजपुरी, गोलकुंडावारो पीछेहीको सरकतु है । भूषण भनत भौंसिला भुवाल भुजबल-रेवाहीके पार अवरंग हरकतु हैं । पेसकसे भेजत इरान फिरंगान, पति उनहूंके उर याकी धाक धरकतु है । साहितनै शिवाजी खुमान या जहानपर, कौने पादशाहके न हिय खरकतु है ॥ १०२ ॥

(परिवृत्ति—दोहा ।)

एक बातको दै जहां, आन बात को लेत ।
ताहि कहत परिवृत्ति है, भूषण सुकवि सुचेत ॥ ६६ ॥

(उदाहरण—कवित्त ।)

दक्षिणधरण धीर धरण खुमान गढ़, लेत गढ़ धरणिसों धरमु दुवार दै । साहि नरनाहको सपूत महाबाहु लेत, मुलक महान छीनि मारि दिनको मारु दै ॥ संगरमें सरजा शिवाजी अरिसैननिको

साज हरिलेत हिंदवान सरसारु दै। भूषण भोंसिला जब यशके पहार लेत, हरजको हार हरगनको अहारदै ॥ १०३ ॥

(परिसंख्य–दोहा)

अनत बरजि कछु वस्तु जहँ, बरणत एकहि ठौर।
ताहि कहत परिसंख्य हैं, भूषण कवि दिलदौर ॥ ९७ ॥

(उदाहरण–कवित्त।)

अति मतवारे जहां द्विरदे निहारियतु, तुरङ्गनमेंही चंचलाई परकीर्ति है। भूषण भनत जहां पर लगें बाननिमें, कोक पक्ष निहि महँ बिछुरन रीति है ॥ गुनिगण चोर जहां एक चितहीके लोक बँधैया जहँ एक सरजाकी गुणप्रीति है। कंपु कदलीमें बैरुबृक्ष बद रीमै शिवराज, अदलीके राजमें यों राजनीति है ॥ १०४ ॥

(विकल्प–दोहा।)

कै यह कै वह कीजिये, जहँ कहनाउति होइ।
ताहि विकल्प बखानहीं, भूषण कवि सबकोइ ॥ ९८ ॥

(उदाहरण–सवैया।)

औरङ्ग जाहु कि जाहु कुमाउं, सिरीनगरेहु कवित्त बनाये। बांधव जाहु कि जाहु अमेर कि, जोधपुरै कि चितौरहि धाये ॥ जाहु कुतुब्ब कि एदिलपै कि, दिलीसहुपै किमि जाहु बुलाये। भूषण गाइ फिरौ महिमै बनि है, चित चाह सिवाहि रिझाये ॥ १०५ ॥

देशनि देशनि नारि नरेशनि, भूषण यों सिख देहिं दयासों। मंगन हो मन दन्त गहौं त्रिन, कन्त तुम्हें हैं अनन्त महासों ॥ कोट गहौ कि गहो बनओट कि, फौजकि जोटसहौ प्रभुतासों। और करो किन कोटि कराह, सलाह, बिना बचिहौ न सिवासों ॥ १०६ ॥

(समाधि–दोहा।)

और हेतु मिलिकरि जहां होत सुकर अतिकाज।

ताहि समाधि बखानहीं, भूषण जे कविराज ॥ ६९ ॥

(उदाहरण—सवैया ।)

वैरु कियो शिव चाहतुहो, तबलौं अरि बाह्यो कटार कठेल्यो ।
योंहि मलेच्छहिं छोड़े नहीं, सरजा मन तापर रोषमें पैठ्यो ॥
भूषण क्यों अफजल्ल बचै, अठपाउ के सिंहको पांउ उमेठ्यो ।
बीछुके घाय धौं क्योंइ धरक्क है, तौलगि धाय धराधर बैठ्यो॥१०७

(समुच्चय-दोहा)

एक बारगी जहँ भयो, बहुत जानिको बन्ध ।
ताहि समुच्चय कहत हैं, भूषण देखि प्रबन्ध ॥ ७० ॥

(उदाहरण—सवैया ।)

मांगि पठायो शिवा कछु देसु, वजीर अजाननि बोल गहेना ।
दौरिलियो सरजा परनालो यों भूषण जो दिन दोउ लगे ना ॥
धांकसी खाक बिजैपुर भो मुख आइगो खान खवासके फेना ।
भै भरकी करकी हरकी धरकी, उर एदिलसाहिकी सेना १०८॥

दो० । वस्तु अनेकनिको जहां, बरणत एकहि ठौर ।
ताहि समुच्चय कहत हैं कोऊ कविशिरमौर ॥ ७१ ॥

(उदाहरण—सवैया ।)

सुन्दरता गुरुता प्रभुता भनि, भूषण होति है आदर जामें ।
सज्जनता औ दयालुता दीनता, कोमलता झलकै पर जामें ॥
दान कृपानहुको करिबो करिबो अभैदानहुको बर जामें ।
साहिनसों रनटेक विवेक, इते गुण एक शिवा सरजामें ॥१०९॥

(प्रत्यनीक-दोहा ।)

जहँ जोरावर शत्रुके, पच्छीपै कर जोर ।
प्रत्यनीक तासों कहत, भूषण बुद्धि अथोर ॥ ७२ ॥

(उदाहरण—सवैया ।)

लाज धरौ शिवाजीसोंलरौ सब, सैयद मीर पठान पठाइकै

भूषण वे गढ़कोट तिहारे, यहां तुम क्यों मठ तोरे रिसाइकैं ॥
हिन्दुनके पतिसों न बसाति, सतावत हिन्दुगरीबन आइकैं।
लीजे कलङ्क न दिल्लीके बालम, आलम आलमगीर कहाइकैं ११०॥

(अर्थापत्ति—दोहा ।)

वह जीत्यो तौ यह कहा, यों कहनावति होइ ।
अर्थापत्ति बखानहीं, ताहि सयाने लोइ ॥ ७३ ॥

(उदाहरण—कवित्त)

शयनमें साहिनकी सुन्दरी सिखावै ऐसे, सरजासों बैर जिनि करो महाबली है। पेसकसे भेजत बिलायत पुरतगाल, सुनिकै जहाजनि है करनाट थली है ॥ भूषण भनत गढ़ कोट माल मुलक दै, शिवासों सलाह राखिये तौ बात भली है। जाहि देत दंड तुम डरिकै अखण्ड सोई, दिल्ली दलमली तौ तिहारी कहा चली है ॥ १११ ॥

(काव्यलिंग—दोहा ।)

है डिढाइबे जो अरथ, ताको करत डिढाउ ।
काव्यलिंग तासों कहत, भूषन जे कबिराउ ॥ ७४ ॥

(उदाहरण—कवित्त ।)

साहत लै जीतिए बिलायतको साहि कीजै, बलक बिलायत के बन्दि अरिहावरे। भूषण भनत कीजै उत्तरी भुवाल वश, पूरबको लीजिये रसाल गजछावरे ॥ दक्षिणके नाहसों सिपाह निज बैरु करि अवरङ्गसाहिजू कहाइये न बावरे। कैसे शिवा मनु गढ़ देत अवरंग गढ़, गाढ़े गढ़पती गढ़ लीने और रावरे॥११२॥

(अर्थान्तरन्यास—दोहा ।)

कह्यो अरथ ताही लिये, वही अरथ जहँ होइ ।
सो अर्थान्तरन्यास है, भूषण कहि सब कोइ ॥ ७५ ॥

(उदाहरण–सवैया ।)

साहितने सरजा समरत्थ करी करनी धरनीपर नीकी । भूलि
गे भोजसे विक्रमसे औ, भई बलि बेनकी कीरति फीकी । भूषण
भिक्षुक भूप भये, भलि भीखलै केवल भौसलाहीकी । नैसिकि
रीझ धनेश करे, लखि ऐसियै रीति सदा शिवजीकी ॥ ११३ ॥

(प्रौढ़ोक्ति–दोहा ।)

जहँ उतकरष अहेतुको, बरणत है करि हेत ।
प्रोढ़ उक्ति तासों कहत, भूषण कवि बिरदैत ॥ ७६ ॥

(उदाहरण–कवित्त ।)

मानसरवासी हंस बसन समान होत चन्दनसो घस्यो घनसारो
न घरीकहै । नारदकी शारदकी हांसी मैं कहांसी मम, शरदकी
सुरसरी कौन पुण्डरीक है ॥ भूषण भनत छक्यो क्षीराब्धिमें थाह
लेत, फेन लपटानों ऐरावतको करी कहै । कैलाश ईश ईशशीश
रजनीश एहो, अवनीश शिवाके न यशको सरीक है ॥ ११४ ॥

(सम्भावना–दोहा ।)

ज्यौं होइ तौ होइ यों, यह सम्भावन होइ ।
ताहि कहत सम्भावना, भूषण कवि सब कोइ ॥ ७७ ॥

(उदाहरण–कवित्त ।)

लोमससरीखी आयु होइ कौनऊ उपाउ, तापरकवच जो करनवारो
धरिये । तापर जो हूजिए सहस बाहु तापर, सहस गुण साहस जो
भीमहूते करिये ॥ भूषण कहैं यों अवरङ्गजूसों उमराव, नाहक कहौ
तौ जाय दक्षिणमें मरिये । चलैना कछू इलाज भेजियतु येही
काज, ऐसो होइ साजु तौ शिवासों जाइ लरिये ॥ ११५ ॥

(मिथ्याध्यवसिति–दोहा ।)

झूठ अर्थकी सिद्धिको, झूठो बरणत आन ।
मिथ्याध्यवसिति ताहिको, भूषण कहत सुजान ॥ ७८ ॥

(उदाहरण—दोहा ।)

पगरन में चल यों लसें ज्यों अङ्गद पगऐन ।
ध्रुवसो ध्रुवसो मेरुसों, शिवसरजाके बैन ॥ ११६ ॥

(उल्लास—दोहा ।)

एकहिके गुण दोषते, औरेके गुण दोष ।
बरणत हैं उल्लास सो, सकल सुकवि करि तोष ॥ ७९ ॥

(उदाहरण—सवैया ।)

काज भही शिवराजबली, हिन्दवान बढ़ाइबे कैं उर ऊटे ।
भूषण भू निरम्लेछ करी, चहैं म्लेछनि मारिबेको रन कूटे ॥
हिन्दु बचाइ बचाए यही, अमरेश चन्दावतलौं कोउ टूटे । चन्द
अलोकति लोकसुखी, यही कोक अभाग जो शोक न छूटे ॥

(दोषेण गुणो यथा—कवित्त ।)

देश दहपट्ट कीने लूटिके खजाने लीने, बचे न गढ़ोई कछु गढ़शिरताजके । तोशदार सकल तिहारे मनसबदार, डांडे जिनके सुभाय जङ्गदे मजाजके ॥ भूषण भनत पादशाहिको यों लोग सब, बचन सिखावत सलाहकी इलाजके । डावरेका बुद्धि ह्वै कै रावरे न कीजै बैर, रावरेके बैर होत काज शिवराजके ॥ ११८ ॥

(गुणेन गुणो यथा—दोहा ।)

नृप समान में आपनी, होन बड़ाई काज ।
साहितनें शिवराजके, करत कवित कविराज ॥ ११९ ॥

(दोषेन दोषो यथा—दोहा ।)

शिव सरजाके बैरको, यह फल आलमगीर ।
छूटे तेरे गढ़ सबै, कूटे गए वजीर ॥ १२० ॥

(अवज्ञा—दोहा ।)

औरेके गुणदोष ते, औरेके गुणदोष ।
जहां अवज्ञा ताहिसों, कहत सुकवि मतिपोष ॥ ८० ॥

(उदाहरण—सवैया ।)

औरनके अनगाढ़ कहा अरु बाढ़ कहा नहिं होत जहां है। औरनके अनरीझ कहा अरु रीझ कहा न मिटावत हा है॥ भूषण श्रीशिवराजहि माँगिए एक महीपर दानि महा है। माँगन औरनिके दरबार गए तो कहा न गए तो कहा है॥ १२१॥

(अनुज्ञा—दोहा ।)

जहां सरस गुण देखिके, करै दोषकी होस।
ताहि अनुज्ञा कहत हैं भूषण कवि इहिं रीस॥ ८१॥

(उदाहरण—कवित्त ।)

जाहिर जहान सुनि सुनि दानके बखान, महादानि साहितने गरीबनिवाज के। भूषण जवाहिर जलूस जरबाफ जोति, देखि शिव सरजाकी सुकविसमाजके॥ तजु करि करि कमलापतिसों मांगतयों, लोग सब करि मनोरथ ऐसी साजके। बैपारी जहाजके न राजा भारी राज के, भिखारी हमें कीजै महाराजशिवराजके॥१२२

(लेश—दोहा ।)

जहँ बरणत गुण दोषकै, कहै दोष गुणरूप।
भूषण ताको लेश कहि, गावत हैं कविभूप॥ ८२॥

(उदाहरण—दोहा ।)

उदभान राठौर गो, श्रीरङ्ग गढ़ धरि पैंड़।
प्रगटे फल ताको लह्यो, परिगो सुरपुर पैंड़॥ १२३॥
कोऊ बचत न सामुहे, सरजासों नर साजि।
भलि कीनी पिय समरते, जीव बचायो भाजि॥ १२४॥

(तद्गुण—दोहा ।)

जहां आपनो रंग तजि, गहै और को रङ्ग।
ताको तद्गुण कहत हैं भूषण बुद्धि उतङ्ग॥ ८३॥

(उदाहरण--कवित्त ।)

पम्पा मानसर आदि अगन तलाव लागे, जिनकी परनि में अकत्थ यूथ गथके । भूषण यों साज्यो रायगढ़ शिवराज रहै, देव चकि ताहिके बनाय राजपथके ॥ बिन बल अबलक कान आशमानमें ह्वै, लेतहैं बिराम जहां इन्दु औ उड थके । महल उत्तङ्ग मणिज्योतिनके संग आनि, कैयां रङ्ग चकहा गहत रवि रथके ॥ १२५ ॥

(पूर्वरूप-दोहा ।)

प्रथम रूप मिटिजात जहँ, फेरि वैसई होतु ।
भूषण पूरबरूप सो, कहत ताहि कविगोतु ॥ ८४ ॥

(उदाहरण--सवैया ।)

ब्रह्मके आननतें निकसी, अतिशय जु पुनीत तिहूँपुर मानी ।
राम युधिष्ठिर के बरणे, बलमीकहुँ व्यास के संग सुहानी ॥
भूषण यों कविके कविराजनि, राजनिके गुण पापनिशानी ।
पुण्यचरित्र शिवा सरजें, वर न्हाइ पवित्र भई बरबानी ॥ १२६ ॥
यों शिर को छहरावत क्षार है, जाते उठै अशमान वभूरे ।
भूषण भूधरऊ धरकै, जिनके धुनिधक्कनि यों बलरूरे ॥
ते सरजा शिवराज दिए, कविराजनि को गजराज गरूरे ।
शुंडनिसों पहिले जिन सोखिकै फेरि महामदसों नद पूरे ॥१२७॥
श्रीसरजा सलहेरिके युद्ध, घने उमरावनिके घर घाले ।
कुंभ चँदावत सैद पठावन, कबंधनि धावत भूधर हाले ॥
भूषण यों शिवराजकी धाक, भये पियरे अरुने रंगवाले ।
लोहे कटे लपटे अति लोहु, भए मुँह मीरनके पुनि काले ॥ १२८ ॥
यों कवि भूषण भाषतुहै, यकतौ पहिलै कलिकालकी सैली ।
तापर हिन्दुनकी सब राह सु, औरंगसाह करी अति मैली ॥

साहितने शिवके डरसों, तुरकौ गहि वारिधिकी दिशि पेली।
वेद पुराणनकी चरचा, अरचा द्विज देवनकी पुनि फैली ॥ १२९ ॥

(अतद्गुण—दोहा ।)

जहँ संगतिमें औरकी गुण कछुवो नहिं लेत।
ताहि अतद्गुण कहत हैं, भूषण सुकवि सुचेत ॥ ८५ ॥

(उदाहरण—सवैया ।)

दीनदयाल दुनी प्रति पालक, जे करता निरम्लेच्छ महीके।
भूषण भूधरि उद्धरिवो, सुने और जिते गुणके सब जीके ॥
या कलिमें अवतार लियो तउ, तेई सुभाव शिवाजी बलीके।
आइ धरो हरितें नर रूप पै, काज करै सिगरे हरिहीके ॥ १३० ॥

दो०। शिवसरजाकी जगतमें, राजति कीरति नौल।
औरतियदृगअंजन हरै, तऊ धौलकी धौल ॥ १३१ ॥

कवित्त। साहिनंद सरजा शिवाके सनमुख आइ, कोऊ बचि जाइ न गनीम भुजबलमें। भूषण भनत भौंसिलाकी दलदौरि सुनि, धाकहीं मरत म्लेच्छ औरँगके दलमैं ॥ रातौ दिन रोवति रहति यवनी है सोतु, परयोई रहतु दिल्ली आगरे सकलमैं। कज्जल कलित अँसुवानिके उमँग संग, दूनो होत रोज रंग जमुनाके जलमैं ॥ १३२ ॥

(मीलित—दोहा ।)

सदृश वस्तुमैं मिलि जहँ, होत न नेकु लखाइ।
मीलित तासों कहत हैं, भूषण जे कविराइ ॥ ८६ ॥

(उदाहरण—कवित्त ।)

इन्द्र निज हेरत फिरत गजइन्द्र अरु, इन्द्रको अनुज हेरै दुगधि नदीशको। भूषण भनत सुर सरिताकों हंस हेरै, विधि हेरै हंसको चकोर रजनीशको ॥ साहितनै शिवराज करणी करी

हेरे तें जु, होत है अचंभौ देव कोटि यों तेंतीसको। पावत न हेरे तेरे यशमैं हेराने निज, गिरिको गिरीश हेरैं गिरिजा गिरीशको॥ १३३॥

(उन्मीलित–दोहा।)

सदृश वस्तुमैं मिलै पुनि, जानत कौनहु हेत।
उन्मीलित तासों कहत, भूषण सुकवि सुचेत॥ ८७॥

(उदाहरण–दोहा।)

शिवसरजा तुव सुयशमैं, मिले धौल छवितूल।
बोल बासते जानियतु, हंस चमेली फूल॥ १३४॥

(सामान्य–दोहा।)

भिन्न रूप जहँ सदृशमें, भेदु न जान्यो जाइ।
ताहि कहत सामान्य है, भूषण कवि समुदाइ॥ ८८॥

(उदाहरण–सवैया।)

पायसकी इकराति भलीनि, महाबली सिंह शिवा तमकेतैं। म्लेक्ष हजारनहीं मरिगे दसहीं मरहट्टनिके झमकेतैं। भूषण हालि उठे गढ़ भूमि, पठान कबंधनिके धमकेतैं। मीरनिके अवसान गए मिलि, धोपनिसों चपला चमकेतैं॥ १३५॥

(विशेषक–दोहा।)

भिन्न रूप जहँ सदृशमें, लहिये कछुक विशेष।
ताहि विशेषक कहतहैं, भूषण सुमति उलेख॥ ८९॥

(उदाहरण––कवित्त।)

अहमदनगरके थान किरवान लैकै, नवसेरीखानसों खुमान भिरयो बलतैं। प्यादेनसों प्यादे पखरैतनिसों पखरैत, बरु। तरवार बखतरवारे हलतैं॥ भूषण भनत यों समान घमसान भयो, जान्यो ना परतु कौन आयो कौन दल तैं। समवेष ताके तहां सरजा शिवाके बांके, बीर जाने हांके देत मरिजाने चलतैं॥ १३६॥

(पिहित-दोहा ।)

परके मनकी जानि गति, ताको देत जनाइ ।
कछू क्रिया करि कहतहैं, पिहित ताहि कविराइ ॥९०

(उदाहरण-दोहा)

गैरमिसिल ठाढ़ो शिवा, अन्तरयामी नाम ।
प्रगट करी रिस साहिकों, सरजा करिन सलाम ॥ १३७ ॥
आनि मिल्यो अरि यों गह्यो, चखनि चकत्ता चाउ ।
साहितनै सरजा शिवा, दियो मुच्छपर ताउ ॥ १३८ ॥

(प्रश्नोत्तर-दोहा ।)

कोऊ पूछे बात कछु, कोऊ उत्तर देत ।
प्रश्नोत्तर तासों कहत, भूषण बुद्धिनिकेत ॥ ९१ ॥

(उदाहरण-सवैया ।)

लोगनिसों भनि भूषण यों कहै खान खवास कहा सिख देहो ।
आवत देसनि लेत शिवा, सरजै मिलिहौ भिरिहौ कि भगैहौ ।
एदिलकी सभा बोलि उठी, यों सलाह करौ न करैं भजि जैहो ।
लीन्हो कहा लरिकैं अफजल, कहा लरिकैं तुमहूं अब लैहो १३९
दो० । को दाता को नर बड़ो, को जग पालनहार ।
कवि भूषण उत्तर दियो, शिवनृप हरिअवतार ॥ १४० ॥

(व्याजोक्ति-दोहा ।)

आन हेतसों आपनो, जहां छिपावत रूप ।
व्याज उक्ति तासों कहत भूषण सब कविभूप ॥ ९२

(उदाहरण-सवैया ।)

साहिनके उमराव जितेक, शिवा सरजा सब लूटिलए हैं ।
भूषण ते बिन दौलत ह्वैकें, फकीरह्वै देस बिदेस गए हैं ॥
लोग कहै तुमै दच्छिन जेयि, सिसोदिया रावरे हाल ठये हैं ।
देत रिसाइकै उत्तर यों, हमहीं दुनियांतें उदास भए हैं ॥ १४१

दो०। शिवा बैर औरंग बदन, लगी रहै नित आहि।
कवि भूषण बूझै सदा, कहै देत दुख साहि ॥ १४२ ॥

(लोकोक्ति और छेकोक्ति—दोहा ।)

कहनावति जो लोककी, लोक उक्ति सो जानि।
जहां कहत उपमान है, छेकउक्ति सो मानि ॥ ९३ ॥

(लोकोक्ति उदाहरण—दोहा ।)

शिवसरजाकी सुधि करौ, भली न कीनी पीव।
सूवा ह्वै दच्छिण चले धरें जात कहं जीव ॥ १४३

(छेकोक्ति उदाहरण—दोहा ।)

जे सुहात शिवराजकों, वे कवित्त रस मूल।
जे परमेश्वरकों चढ़ैं, तेई अच्छे फूल ॥ १४४ ॥

(वक्रोक्ति—दोहा ।)

जहं श्लेषके काकुसों, अरथ लगावै और।
वक्र उक्ति तासों कहत, भूषण कवि शिरमौर ॥ ९४ ॥

(उदाहरण—कवित्त ।)

साहितने तेरे बैरु बैरिनको कौतुकसों, बूझत फिरत कहौ कोह रहे तचिहौ। सरजाके डर हम आए इतै भाजि तौअव, सिंह सोइ एहि याही ठौरतें उकचिहौ ॥ भूषण भनत वै कहैकै हम शिवकहे तुम चतुराई सों कहत बात रचिहौ। शिव जापै रुठ्यौ तौ निपट कठिनाई तुम, बैर त्रिपुरारिके त्रिलोकमें न बचिहौ॥१४५

दो०। करि मुहीम आए कहै, हजरति मनसब बन।
शिव सरजासों जंग जुरि एहै बचिकै हैन ॥ १४६ ॥

(स्वभावोक्ति—दोहा ।)

सांची त्योंही बरणिये, जैसी जानि सुभाव।
ताहि सुभवोकति कहै, भूषण जे कविराज ९५ ॥

(उदाहरण—कवित्त ।)

दानसमै द्विज देखि मेरहू कुबेरहूकी, सम्पति लुटाइबेको हियो ललकतुहै। साहिके सपूत शिव साहिके सदनपर, शिवकी कथा-निमें सनेह झलकतुहै॥ भूषण जहान हिन्दवानिके उबारिबेको, तुरकानि मारिबेको बीर बलकतुहै। साहिनसों लरिबेकी चरचा चलति आनि, सरजाके दृगनि उछाह छलकतुहै॥१४७॥

काहूके कहे सुनेते जाही ओर चाहै ताही, और इकटक घरी चारिक चहतहै। भूषण भनत कहैतैं कहत बात, कहैतैं पियत खात ऊंची सांसेनि नहतहै॥ पौढ़है तो पौढ़े बैठे बैठे खरे खरे हम, को है कहा करत यों ज्ञान न गहतहै। साहिके सपूत शिवसाहि साहि तेरे बैर ऐसे, साहि सब राख्यो दिग मोहत रहतहै॥ १४८॥

(भाविक—दोहा ।)

भयो होनहारो अरथ, बरणत जहँ परतच्छ।
ताकों भाविक कहत हैं, भूषण कवि मति स्वच्छ॥ ९६॥

(उदाहरण—कवित्त ।)

अजौं भूतनाथ मुंडमाल लेत हरषत, भूतनि अहार लेत अजहूं उछाह है। भूषण भनत अजौं काटे करवालनिके, कारे कुंजरनि परी कठिन कराहहै॥ सिंह शिवराज सलहेरके समीप ऐसी, कीन्हो कतलान दिल्लीदलको सिपाह है। नदी रणमंडल रुहेलनि रुधिर अजौं अजौं रविमंडल रुहेलनिकी राह है॥ १४९॥

गजघटा उमड़े महाघन घटासी घोर, भूतल सकल मदजलसों पटतु है। भूषण बढ़त भौंसिला भुवालको यों तेज, जेतो सब बारहो तरनिमें बढ़तुहै॥ बेला छांड़ि उछलत सातौं नीरनिधि मन, मुदित महेशमौज नाचतु लहतहै। शिवाजी खुमान दल दौरत जहानपर, आनि तुरकानि पर प्रलै प्रगटतुहै॥ १५०॥

(भाविक छवि-दोहा ।)

जहँ दूरस्थित वस्तु को, देखत बरणत कोइ ।
भूषण भूषण राउ यह, भाविक छवि सो होइ ॥ ९७ ॥

(उदाहरण-सवैया ।)

सूबनि साजि पठावत हौ, निज फौज लखे मरहट्ठनि केरी ।
औरंग आपनि दुग्ग जमाति, बिलोकत तेरेहि फौज दरेरी ॥
साहितनै शिव साहि भई, भनै भूषण यों तुव धाक घनेरी ।
रातिहु द्यौस दिलीसनके तुव, सेनकि सूरति सूरति घेरी ॥१५१॥

(उदात्त-दोहा ।)

अति संपति बरणत जहाँ तासों कहत उदात ।
कै आने सु लखाइये, बड़ी आनकी बात ॥ ९८ ॥

(उदाहरण-कवित्त ।)

द्वारनि मतङ्ग दीसैं अङ्गने तुरङ्ग हीसैं, बन्दीजन भारण असीसैं जसरतहैं । भूषण बखानै जरबाफके सम्याने ताने, झालरिन मोतिनके झुंड झुलरतहैं ॥ महाराज शिवाके निवाजकविराज ऐसे, साजिकै समाज जिहि ठौर बिहरत है । लालकरै प्रात तहाँ नीलमणि करैं राति, इहिं भांति सरजाकी चरचा करतहैं१५२

दो० । या पूनामैं मति टिकौ, खान बहादुर आइ ।
ह्यांई साइस्तखानको दीनो शिवा हजाइ ॥ १५३ ॥

(अत्युक्ति-दोहा ।)

जहाँ सूरतादिकनकी, अति अधिकाई होइ ।
ताहि कहत अतिउक्ति हैं, भूषण जे कबिलोइ ॥ ९९ ॥

(उदाहरण-कवित्त ।)

शाहितनै शिवराज ऐसे देत गजराज, जिन्है पाइ होत कविराज बेफिकिरि हैं । झूमति झलझलाति झूलैं जरबाफिनकी, जकरे जंजीर जोर करत किरिरि हैं ॥ भूषण भँवर भननांत घननांत घंटाग

झननात मनो घन रहे घिरि हैं। जिनकी गरज सुनि दिग्गज बेआब होत, मदहीके आब गरकाब होत गिरि हैं ॥ १५४ ॥

आजु यहि समै महाराज शिवराज तुही जगदेव जनक जजा ति अंबरीकसो। भूषण भनत तेरे दान जलनिधि में, गुनिनको दारिद गयो बहि खरीकसो ॥ चंदकर किंजलक चांदनी पराग उड़बृन्द मकरन्दबुंद पुंजके शरीकसो। कुंदसम कयलाशनाकगंग नाल तेरे, जस पुण्डरीकको अकास चंचरीकसो ॥ १५५ ॥

दो०। महाराज शिवराजके, जेते सहज सुभाइ।
औरनिको अतिउक्तिसे, भूषण कहत बनाइ ॥ १५६ ॥

(निरुक्ति–दोहा।)

नामनिकों निज बुद्धिसों, कहिये बात बनाइ।
तासों कहत निरुक्ति हैं, भूषण जे कविराइ ॥ १०० ॥

(उदाहरण–दोहा।)

कविगनको दारिददुरद, याहीं दल्यो अमान।
याते श्रीशिवराजको, सरजा कहत जहांन ॥ १५७ ॥

(हेतु–दोहा।)

या निमित्त यहई भयो, यों जहां वर्णन होइ।
भूषण हेतु बखानही, सकल सयाने लोइ ॥ १०१ ॥

(उदाहरण–कवित्त।)

दारुन दैयत हिरनाकुस विदारिवेकों, भयो नरसिंह रूप तेजु विकरारहै। भूषण भनत त्योंही रावणके मारिवेकों, रामचन्द्र भयो रघुकुलसिरदार है ॥ कंसके कुटिल बलबंसनि निदरिवेको, भयो यदुराइ बसुदेवको कुमार है। पृथ्वीपुरुहूत साहिके सपूत शिवराज म्लेच्छनिके मारिवेकों तेरो अवतारहै १५८ ॥

(अनुमान—दोहा ।)

जहां काज ते हेतुके, जहां हेतु ते काज ।
जानि परत अनुमान सों, कहि भूषणकविराज ॥ १०२ ॥

(उदाहरण—कवित्त ।)

चित्त अनचैन आंसू उमगत नैन देखि, बीबी कहैं बैन मियां कहियतु काहिनै । भूषण भनत बूझे आए दरबार तें, कंपत बार-बार क्यों सम्हारत न माहिनै । सीनो धकधकतु पसीनो आयो देह सब, हीनो भयो रूप न चितौत बामें दाहिनै । शिवाजूकी सङ्क मान गएहो सुखाइ तुम्है, जानियतु दक्खिनको सूबा कर्यो साहिनैं ॥ १५९ ॥

(छेक—और लाटानुप्रास दोहा ।)

स्वरसमेत अक्षर कि पद, आवत सदृस प्रकास ।
भिन्न अभिन्नानि पदनि कहि, छेक लाट अनुप्रास ॥१०३॥

(छेक तथा—अमृतध्वनि ।)

दिल्लिय दलनि गजाइ करि, शिव सरजा निरसंक ।
लूटिलियो सूरति शहर, बंककरि अति डंक ॥
बंककरि अति, डंककरि असतंककलि खल ।
सोचचकित, भरोचचलिय, विमोचचखजल ॥
तट्ठइमन, कट्ठिसोइ, रट्ठिल्लिय ।
सद्दिशिदिशि, भद्दविभइ, रद्दिल्लिय ॥ १६० ॥
गत बलखान दलेल हुव, खान बहादुर मुद्ध ।
शिव सरजा सलहेरि ढिग, कुद्धद्धरि किय युद्ध ॥
कुद्धद्धरि किय, युद्धद्धरि अरि अद्धद्धरि करि ।
मुंडड्डरि तहं रुंडड्डकरत, डुंडडुगभरि ॥
खेदिद्दरबर छेदिद्दयकरि मेदद्दधि दल ।

जंगग्गतिसुनि रंगग्गलि, अवरंगग्गतबल ॥ १६१ ॥
लिय धरि मुंहकमसिंहकहं अरु किपोर नृपकुम्भ ।
शिवसरजा संग्राम किय भुम्मम्मचि करि घुम्म ॥
भुम्मम्मधि करि, घुम्मम्मडि रिपु, झुम्मम्मालि करि ।
जंगग्गरजिउ, तंगग्गरत्त, मतंगग्गन हरि ॥
लक्खक्खन रन,दक्खक्खलनि अरुक्खक्खिन भरि ।
मोल्लल्लहि जसु नोल्लल्लरि बहलोल्लल्लिय धरि ॥ १६२ ॥
लिय जित दिल्लीको मुलुक, शिवसरजा जुरि जंग ।
भनि भूषन भूपति भजे भंगग्गरब तिलंग ॥
भंगग्गरब, तिलंगग्गयउ, कलिंगग्गलि अति ।
दुंदिद्दबि दुद्दु दंदद्दलनि बिलंदद्दहसति ॥
लच्छच्छिन करि, म्लेच्छच्छयकिय स्वच्छच्छविछिति ।
ढाल्ल्लगि, नरपाल्लल्लरि, परनाल्लल्लियजिति ॥ १६३ ॥

छप्पय । मुंड कटत कहुं, रुण्ड नटत कहुं सुण्ड पटत घन ।
गिद्ध लसत कहुं, सिद्ध हंसत, सुखवृद्धि रसत मन ॥
भूत फिरत, करि बूत भिरत, सुरदूत विरत तहँ ।
चंडि नचति, गन मंडि रचति, धुनि डंडि मचति जहँ ॥
इमि ठांनि घोर घमसांन अति, भूषण तेजु कियो अटल ।
शिवराज साहि सुव खग्गबल, दलि अडोल बहलोलदल ॥ १६४ ॥

कवित्त । बेहर बरार बाघ बांदर बिलार बिग, बगरे बराह जान-वरनिके जोम हैं । भूषण भनत भारे भालुक भयानक हैं, भीतर भवन भरे लीलगऊ लोम हैं ॥ पैडायल गजगन गैंडा गररातगन-गेहनिमै गोहनि गरूर गहे गोम हैं । [illegible]वाजीकी धाक मिल खलकुल खाक बसे, खलनके खेरनि [illegible]हैं ॥ १६५ ॥

(लाटानुप्रास यथा—कवित्त ।)

तुरकानी तहखाने तीतुर गुसलखाने, सूकर सिलहखाने कूकत करीस है। हरिन हुरमखाने सिंह हैं सुतरखाने, पीपखाने पाढ़ी है करंजखाने कीस हैं॥ भूषण शिवाजी गाजी खग्गसों खपाये खल, खाने खाने खलनिके खेरे भये खीस है। खड़जी खजाने खरगोश खिलवतखाने, खीस खोले खसखाने खांसत खवीस हैं॥ १६६॥

दो०। औगनिते यांचे कहा, नहि यांच्यो जो शिवराज।
औगनिके यांचे कहा, यांच्यो जो शिवराज॥ १६७॥

(यमक—दोहा ।)

भिन्न अरथ फिरि फिरि जहां, वेई अक्षरवृन्द।
आवतहैं सो जमक कहि, वरनत बुद्धिविलन्द॥ १०४॥

(उदाहरण—कवित्त ।)

पूनावारी सुनिके अमीरनिकी गति लई, भाजिवेको मीरनि समीरनिकी गति है। मार्यो जुरि जङ्ग जसवन्त जसवन्त जाके, सङ्ग केते रजपूत रजपूतपति है॥ भूषण भनत यों कुलभूषण शिवैला शिवराज तोहि दीनी शिवराज बरकति है। नौहूखंड द्वीप भूप भूतलके दीप आजु, समैके दिलीप दीलीपति को सदति है॥ १६८॥

(पुनरुक्तवदाभास—दोहा ।)

भासतही पुनरुक्त सों, नहि निदान पुनरुक्त।
वदाभासपुनरुक्त सों, भूषण वरनत युक्त॥ १०५॥

(उदाहरण—कवित्त ।)

अरिनके दल सेन संगरमें समुहाने, टूक टूक सकल के डारे घायमानमें [illegible] महानद परवाह पूरो, बढ़त है हाथिनके

मद जलदानमें ॥ भूषण भनत महाबाह भौंसिला भुवाल, शूर रविसम तेजु तीखन कृपानमें । भाल मकरन्द कुलचन्द कला निधि तेरो, सरजा शिवाजी यश जगत जहानमें ॥ १०६ ॥

(कामधेनुचित्र—दोहा ।)

लखे सुने अचिरजु बढ़े, रचना होइ विचित्र ।
कामधेनु आदिक घने, भूषण बरणत चित्र ॥ १०६ ॥

(उदाहरण—सवैया ।)

भुव जो गुरुता तिनिको नरभूषण, दानि बड़ो गिरिजा पिव है । हुवसो हस्तिारिनको तरुभूषण, दानि बड़ो सरजा शिव है ॥ भुवको भरता दिनको नरभूषण, दानि बड़ो सरजा शिव है । तुव जो करता इनको अरु भूषण, दानि बड़ो सरजानिव है ॥ १०७ ॥

(शंकर—दोहा ।)

भूषण एक कवित्तमें, भूषण होत अनेक ।
शंकर तासों कहत हैं, जिन्हें कवितको टेक ॥ १०७ ॥

(उदाहरण—कवित्त ।)

ऐसे बाजिराजदेत महाराज शिवराज, भूषण जे बाजकी समाजै निदरतुहै । पौन पांइ होतहग घंघटमें लीन मीन जलमें बिलीन क्यों बराबरी करतु है ॥ सबते चलाक चित तेऊ कुलि आलमके रहै उर अन्तर ते धीर ना धरतु है । जिन चढ़ि आगेको चलायतु तीर तीर, धरि तऊ तीर तीर पीछेही परतु है ॥ १७१ ॥

(ग्रन्थसूची—छन्द ।)

उपमा अनन्वय कहि बहुरि, उपमाप्रतीप प्रतीप ।
बरणत सु उपमेयोपमा, मालोपमा कवि दीप ॥ १ ॥
ललितोपमा रूपक बहुरि परिनाम पुनि उल्लेख ।
स्मृति भ्रांति अरु संदेह कह, आपन्हुत्ति पुनि सुभवेष २ ॥

हेतु अपन्हुति बहुरि सुनि, पर्जस्तपन्हुति मानि।
पुनि भ्रांतपूर्व अपन्हुत्यौं, छेकअपन्हुति जानि॥ ३॥
कैतव अपन्हुति अरु सुनौ, उतप्रेक्षा सु बखानि।
रूपक अतिशय उक्ति, भेदक अतिशयोक्ति बखानि॥४॥
अक्रमा अतिशय उक्ति, चञ्चल अतिशयोक्ति सुलेष।
अत्यन्त अतिशय उक्ति पुनि, पढ़िये समान्य विशेष५॥
कहि तुल्य दीपकवृत्त, प्रतिवस्तूपमा दृष्टान्त।
सु निदर्शना व्यतिरेक पुनि, सह उक्ति बरणत सन्त ६॥
वीनोक्ति भूषण समासोक्ति, सु परिकरौ अहवंस।
परिकरसुअङ्कर श्लेष त्यों, अप्रस्तुतौपरसंस ७॥
परजा उकत्ति गनाइये, व्याजस्तुती आक्षेप।
कहिये विरोध विरोधभास, विभावना सुखखेप॥ ८॥
सु विशेष उक्ति असम्भवो, बहुरखो असङ्गति लेखि।
पुनि विषमसम सुविचित्र प्रहसन, औ विषादनपेखि९॥
कहि अधिक न्योन्य विशेष, व्याघाता परस्परचारु।
अरु गुम्फ एकावली मालादीपकहि पुनि सारु १०॥
सुनि यथासंख्य बखानिये, पर्जाय पुनि परिवृत्ति।
परिसंख्य कहत विकल्प है, जिनके सुमति संपत्ति ११॥
बहुरखो समाधि समुच्चयो, अरु प्रत्यनीक बखानि।
पुनिकहत अर्थापत्ति कविजन, काव्यलिङ्ग सुजानि॥ १२
अरु अर्थ अन्तरन्यास भूषण, प्रौढ़ उक्ति गनाइ॥
सम्भावना मिथ्याध्यवसिती, पुनि उलासहि गाइ॥ १३
अवज्ञा अनुज्ञा लेस तद्गुण, पूर्वरूप उरेखि।
अनगुन अतद्गुनमिलित, उन्मीलितहिपुनिबुधलेखि १४

सामान्य और विशेष पिहितौ, प्रश्न उत्तर जानि ॥
पुनि व्याज उक्ति रु लोक उक्ति,सुछेकउक्ति बखानि १५॥
वक्रोक्ति और स्वभाव उक्ति, सुभाविको निरधारि ।
भाविकरु छवि सुवदात कहि,अत्युक्ति बहुरि विचारि ॥१६
बरने निरुक्ति रु हेतु, अनुमानौ सु छेकनुप्रास ।
भूषण भनत पुनि जमक गनि, पुनरुक्तवदआभास ॥१७
ईसि चित्र सङ्कर एकसै, भूषण कहे अरु पांच (१०५) ॥
बांचत सुनत जिन ग्रन्थको, मानैं सुकविवर सांच ॥ १८

(ग्रन्थरचनाकाल—दोहा ।)

सन सत्रहसै तीस (१७३०) पर, शुचि वदि तेरस भान ।
भूषण शिवभाषण कियो पढ़ियो सुनौ सुजान ॥ १ ॥

(उपसंहार—कवित्त ।)

एक प्रभु ताको धाम सजे तीनौ बेद काम, रहै पञ्चानन षड़ानन राजी सर्वदा । सातौ बार आठौ याम याचक निवाजे नव,अवतार थिर राजै कृपान त्यों हरिगदा । शिवराज भूषण अटलरहै तौलौं जौलौं, त्रिदश भुवन सब गङ्ग औ नरमदा । साहितनै साहसिक भौंसिला सूर्यवंश दाशरथिराज तौलौं सरजा थिर सदा ॥ १ ॥

इति श्रीभूषणकविकृत शिवराजभूषण समाप्त ।

कवित्त। महा महाराष्ट्रराज्य-सामराज्य थापनमें जाहिर जगत जाहि, भूमिकासी ताकीहै। जोमभरी दिल्लीबादशाहत उथप्पनमें, नाशक गजब शक्ति, बिजुली छटाकीहै॥ रंगभूमि राजकमलाके, थिरबेलिबेकी राजनीति गति जामें, खेलन पटाकीहै। भूषण गिराकी भूषणीय अरचाकी, हिंद बीरमदछाकी बांकी नजर शिवाकीहै॥ १॥ आरज धरमतरु, सींचन घटासी दीसी नासन जवासी, अवरंगमनसाकीहै। जामधि पतंग, अफजल, बहलोल आदि यवन अमीरनकौ दीपक शिखासीहै। मांगे बिनु कविनको, दारिद मिटाय आश पूरे मनसाकी गति कल्पलतिकाकीहै॥ भूषण गिराकी, भूषणीय अरचाकी हिंद बीरमदछाकी बाँकी, नजर शिवाकी है॥ २॥ समर समाज मांझ, शूरमरहट्टनिके जलधि उछाह जोति, चन्द्रचन्द्रिकाकीहै। मूक करे यवन-उलूक पादसाहनको अंधकरिबेमें कांति, रविसम ताकीहै॥ सकल विपक्षन, दबावत रुवाबभरी अधिदेवताकि यह दशहुं दिशाकीहै। गिराकी, भूषणीय अरचाकी हिंद बीरमदछाकी बांकी, नजर शिवाकीहै॥ ३॥ यवन दवागि दग्ध, रजपूत राजनको तुरत जिवावें, जामें शकति सधाकीहै। सूबा बादशाही परपक्षिनके हेतु पुनि कातिल कहर, हालाहल चरसाकीहै॥ युद्धकला अजब गिराते मरहट्टनको सिखवें अनूप जामें, गतिप्रभुताकीहै। भूषण गिराकी, भूषणीय अरचाकी हिंद बीरमदछाकी बांकी, नजर शिवाकीहै॥ ४॥ खेंचे मुगलाही देशा चारहूं दिशानमेंते दक्षिण तरफ लोह-चुंबक दशाकीहै। कुसमकलीसमान, दिल्लीरस चूसलेत गति बसे जामें देखो मधुप कलाकीहै॥ मुगल मलेक्ष, परपच्छिन बधूनहेत दिधवापनेकी देन-हारी दक्षिनाकीहै। भूषण गिराकी, भूषणीय अरचाकी, हिंद बीरमद छाकी बांकी, नजर शिवाकीहै॥ ५॥

अथ श्रीशिवाबावनी ॥

छप्पय ।

जय जयन्ति जय आदि शक्ति जय कालि कपर्दिनि ।
जय मधुकैटभ छलनि देवि जय महिष विमर्दिनि ॥
जय चमुण्ड जय चण्डमुण्ड भण्डासुर खण्डिनि ।
जय सुरक्त जय रक्तबीज बिड्डाल विहण्डिनि ॥
जय निशुम्भ शुम्भद्दलनि भनि भूषण जय जय भननि ।
सरजा समर्थ शिवराज कहँ देहि विजय जय जग जननि १॥
विजयपुर विदनूर शूर सर धनुष न सन्धहि ।
मङ्गल विनु मल्लारि नारि धम्मिल न बन्धहि ॥
गिरत गब्भ कोटैगरब्भ चिञ्जी चिञ्जाउर ।
चाल कुण्ड दल कुण्ड गोलकुण्डा संका उर ॥
भूषण प्रताप शिवराज तुव इमि दक्षिनादिशि सञ्चरहिं ।
मधुरा धरेश धकधकतसो द्रविड़ निविड़ डर दबि डरहिं ॥ २॥
प्रेतनी पिशाचरु निशाचर निशाचरीन मिलि मिलि आपसमे गावत बधाई है ॥ मेरो भूत प्रेत भूमि भूपर भयङ्कर से, जुत्थ जुत्थ योगिनी जमात जुरि आई है ॥ किलक किलक के कुतुहल करत काली, डिमक डिमक डौरु दिगम्बर बजाई है ॥ शिवा पूछें शिवसों समाज आज कहां चले, काहूपै शिवानरेन्द्र भृकुटी चढ़ाई है ॥ ३ ॥बाजि बम्ब चढ्यो साजि बाजि जब कलाभूप, गाजी महाराज राजी भूषण बखानतें । चण्डी की सहाय महि मण्डीतें जताई रेण्ड, छण्डी राजा राय किन चण्डी आनि आनतें ॥ मन्दी भूतगविरजबन्दी भूत हठभर, नन्दी भूतपति भो अनन्दी अनुमा-

नते। रंकीभूत दुवन करङ्कीभूत दिगदन्ती, पंकीभूत समुद सुलह्लीके पयानतें ॥ ४ ॥

कवित्त । बाने फहराने घहराने घण्टा गजनके, नाहीं ठहराने वार राने देश देशकेनगर बहिराने अरि नगन पराने सुनि, बाजत निशाने शिवराजजू नरेशके। हाथिनके हौदा लोकसाने कुम्भ कुञ्जरके, भौनके भजाने अलिछूटे लटकेशके । दलके दरारेहूते कमठ करारे फूटे, केराकेसे पात बिहराने शिर शेषके ॥ ५ ॥ साजि चतुरङ्ग वीर रङ्गमै तुरङ्ग चढ़ि, सिरजा शिवाजी जङ्ग जीतन चलत हैं। भूखन भनत नाद बिहद नगारनके, नयन नार मन्द दिशा गजको लगतु है । ऐल फैल खैल भैल खलकमें गैल गैल गजनकी ठेल पेल शैल उसमत है । तारासों तरनि धूरि धारासों लगत जिमि , थारापर पारा पारावार ज्यों हलत है ॥ ६ ॥ साजि, गज बाजि शिवराज सैन साजतहीं, दिल्लीदल गही दिशा दीरघ दवनकी । तनियान तिलक सुथनियां न रहीं अंग, घामै घबराने छोंड़ि सेजियां सुमनकी ॥ भूखन भनत काहू काहूकी न छांह पैयाँ, वे छबीली ताकि ताकि रहियां सखनकी । गालियां शिथिल भई बालियां बिथरिगई, लालियां उतरि मुगलानियां मुखनकी ॥७ जा दिन चढ़त दल साजि अवधूत सिंह तादिन दिगंतलौं दुवन दाटियतु है।प्रलय कैसी धारावर धमकै नगारा धरि, धाराते समुद्रनकी धारा फारियतु है ॥ भूषण भनत भुवगोलको कहारतहीं, हहरत तगाजिमि गज काटियतु है। कांचसों कचड़जात शेषके अशेष फनकमठके पीठ पै पिठीसी बाटियतु है ॥८॥ दुग्ग वर दुग्ग जीते सरजा शिवाजी गाजी, डग्ग नाचे डग्गपर रुंड मुंड फरके । भूखन भनत बाजे जीतके नगारे भारे, सारे करनाटी भूप सिंघलको सरके ॥ मारे सुनि सुभट पनारे उदभट तारे लगे भिरन सितारे

गढ़ धरके। गोलकुण्डा धीरनके बीजापुर बीरनके, दिल्लीउर मीर-
नके दाड़िमसे दरके ९॥ कोट गढ़ दाहियतु एकै पादशाहनके, एकै
पादशाहनके देश दाहियतु है। भूषणभनत महाराजशिवराज एकै
शाहन के सैनपर खग्ग बाहियतु है॥ क्यों न होहिं बैरिनकी
बौरीसी बरबधू, दौरन तिहारे कहे क्यों निबाहियतु है। राउरे
नगारे सने बैरवारे नगरन, नैनवारे नदन निवारे चाहि-
यतु है॥ १०॥ मालवा उजैन भन भूषण भेलसा ऐन, शहर
सिरोजलों परायने परत हैं। गोंडवानों तिलगानों फिरगानों
करनाटक, हिंदुवानो हिंदुनको हियो हहरत है॥ साहुके सपूत
शिवराज तेरी धाक सुनि, गढ़पति बीर तेऊ धीर न धरत है।
बीजापुर गोलकुंडा आगरे दिलीके कोट, बाजे बाजे दिन दरवा-
जे उघरत है॥११॥ फिरगाने फिकिर औ हद सुनि हबसाने
भूषण भनत कोऊ सोवत न घरी है। बीजापुर बिपति बिडरि सुनि
भाज्यो सब, दिल्ली दरगाह बीच परी खरभरी है। राजनके राजा
सब साहनके शिरताज, आज शिवराज पादशाही चित धरी है।
बलक बुखारे कासमीरलौं परी पुकार धाम धाम धूमधाम रूमसाम
परी है॥ १२॥ बलकबुखारे मुलतानलौं हहरपारे, कपिललों पुकारे
कोऊ धरत न सार है। रूम रूंदि डारे खुरासान खूंदि मारे, खाक खादर
लौं झारे ऐसी साउको बहार है॥ कक्करलौं बक्खरलौं मक्करलौं
चले जात, टक्कर लिवैया कोऊ वार है न पार है। भूषण सिरोजलौं
पराउनी परत फेर, दिलीपर परत परिन्दनकी छार है॥ १३॥ बहल
न होय दल दच्छन घमण्ड माहिं, घटा हु न होय दल शिवाजू
हकारीके। दामिनी दमक नाहिं खुले खग्गबीरनके, बीर सि-
रछाप लख तीज्या असवारी के॥ देख देख मुगलोंकी हुरमा म-
न्दिर त्यागे, उझक उझक उठे गरद बीच दारीके। दिल्ली मत

भूली कहं बात बन घोर घोर, बाजत नगारे जे सतारे गढ़वारेके॥१४॥ चकित चकत्ता चौंक चौंक उठे बारबार, दिल्ली दहसति चित चाहै खरकति है। बिलखति बदन बिलखाति बीजापूरपति, फिरत फिरङ्गिनकी नारी फरकति है। थरथर कांपत कुतुबसाह गोलकुण्डा, हहिर हबस भूप भीरैं भरकति है। राजा शिवराजके नगारनकी धांक सुनि, केते बादशाहनकी छाती दरकति है॥१५॥ अफजलखान को जिनोने मैदान मारा, बीजापुर गोलकुण्डा मारो जिन आज है। भूषण भनत फरासीससे फिरङ्गी मारि, हबशी तुरक डारे उलटि जहाज है॥ देख तुम्हें ऐसे रुपतमकों जिन खाक किया, मालरकी सुरत आज सुनी जो अवाज है। चौंक चौंक चकता कहत चहुंघाते यारो, लेत रहो खबर कहांलौं शिवराज है॥१६॥ शेवाजीने जीत्या है सलोरकों समर सुन, सुन सुन असुरनके सीने धरकत है। देवलोक नागलोक नरलोक गावै यश, अजहूं लौं परे खग्ग दांत खरकत है॥ कटक कटक काट कीटसे उड़ाय केते, भूषण भनत मुख मोरे सरकत है। रणभूमि लेटे अधकटे फरलेटे परे, रुधिरलपेटे पठनेटे फरकत है॥१७॥ चन्द्रावलि चूर करि जाउली जबत कीन्ही, मारे सब भूप सौं सँहारे पुर धायके। भूषण भनत तुरकान दलथम्भ काटि, अबदल मारि डारे तबल बजायके॥ एदिलसौं बेदिल है हरम कहै बार बार, अब कहा सोवो सुख सिंहइ जगायके। भेजना है भेजो जो रिसालैं शिवराजजूकी, बाजी करनालैं परनालैपर आयके॥१८॥ उतै पादशाहनके गजनके ठट्ठ छूटे, उमड़ि घुमड़ि मतवारे घन भारे हैं। इतै शिवराजजूके छूटे सिंहराज कैधौं, दारे कुम्भ करिनके चिकरत कारे हैं॥ फौजें शेख सैयद मुगल औ पठानकी, मिलि अफजल काहू मीरन सम्भारे है। हद हिन्दुवानकी

बिहद्दत पखारि राखे, कैयो बार दिलीके गुमान झारिडारेहैं ॥ १९ ॥ छूटत कमान और तीर गोली बाननके, मुशकिल होत मुरचानहूकी ओट में । ताही समय शिवराज हुकुमके हला कीन्हो, दावाबांध परहला बीरभट जोटमें ॥ भूषण भनततेरी हिम्मत कहांलों गिनौ, किम्मत इहां लग है जाके भट जोटमें । ताव दै दै मूछन कँगूरनमें पांव दै दै, घावदैदै अरिमुख कूदे परैं कोटमें ॥ २० ॥ सारससे सूबा करवान कसे शाहजादे, मीरसे मुगुल मीर धीरमें धचै नहीं । बगलासे बगस बलूच औ वलख ऐसे, काबिली कुलंग यातेरणमें रचे नहीं ॥ भूषणजू खेलत सितारेमें शिकार संभा, शिवाकोसुवन, जाते दुवन बचैनहीं । बाजी सब बाजकी चपेटैं चंग चहूं ओरे तीतर तुरक दिली भीतर बचै नहीं ॥ २१ ॥ कत्ताकी धारसों चकत्ताको कटक काट्यो, कीन्ही शिवराज बीर अकह कहानियां । भूषण भनत तिहूंलोकमें तिहारी हांक, दिल्लीकी विलायत सकलबिललानियां ॥ आगरेअगारन्ह है फांदतीं कगारन्ह छ्वै, बांधती न बारन मुखन कुँभिलानियां । सीबी कहै मुखतै गरीबीगहे भाग जैबे, बीबी गहे सूथनी सुनीबी गहे रांनियां ॥ २२ ॥ ऊँचे घोर मन्दिरके अंदर रहनवाली, ऊंचे घोर मन्दरके अंदर रहातीहैं । कंदमूल भोग करै कंदमूल भोगकरै, तीनिबेर खातीथीं सो तीन बेर खाती हैं ॥ भूखन शीतल अंग भूषण शीतल अंग, व्यञ्जन डुलाती ते व्यंजन डुलाती हैं । भूषण भनत शिवराज बीर तेरे त्रास, नगन जनाती ते वे नगन जनाती हैं ॥ २३ ॥ सोंधेको अधार किसमिस जिनको अहार, चारकोसो अंक लङ्क चंद सरसातीहैं । ऐसी अरिनारी शिवराज बीर तेरे त्रास, पाइनमें छालेपरे कंदमूल खातीहैं ॥ ग्रीषमकी तपत एती तपती न सुनि कान, कंज

कैसी कली बिन पानी मुरझातीहैं। तोरि तोरि आछेसे पछोरासे निचोर मुख, तुमतो कहत कंथ मुक्तामें पानीहैं ॥ २४ ॥ अंदरते निकसीं न मन्दिरको देख्यो द्वार, बिन रथ पथ पै उघारे पैर जातीहैं। हवाहू न लागती ते हवातैं बिहाल भईं, लाखनकी भीरते सम्हारत न छातीहैं ॥ भूषण भनत शिवराज तेरी धाकसुनि, हाय दौरी चीर फारी मन झुझुलातीहैं। ऐसी परे नरम हरम बादशाहनकी, नासपाती खाती ते बनासपाती खातीहैं ॥ २५ ॥ उतरि पलंगते जिन दियो ना धरापै पग, तेऊ सगबग निशिदिन चली जातीहैं। अति मुरझाती अकुलाती ना छिपाती गात, बात न सुहाती बोलैं अति अनखातीहैं ॥ भूषण भनत सिंह साहूके सपूत सेवा, तेरी धाक सुने अरि नारी बिललातीहैं। कोऊ करै घाती कोऊ रोती पीटिछाती घरै, तीनि बेरखाती तेअब तीनबेर खाती हैं ॥ २६ ॥ अतर गुलाब सर चोवा घनसार सब, सहज सुवासकी सुगन्ध बिसरातीहैं। पलभर पलंगते भरापै न धरती पांव, भूली खान पान फिर बन बिललातीहैं ॥ भूषण भनत शिवराजतेरी धाक सुनि, दारा हार बार न संभार अकुलाती हैं। ऐसी देह बरम हुरम पादशाहनकी, नासपाती खाती ते बनासपाती खातीहैं ॥ २७ ॥ साहिन सिरताज ज्यों सिपाहिनमें पादशाह, अचल मन सिन्धु जैसे जिनके सुभाव हैं। भूषण भनत परी शत्रु रण सेवा धाक, कांपत रहत न गहत चित चाव हैं ॥ अथह जल विमल कलिंदी तट झूल केते, परे युद्धविपतिके मारे उमराव हैं। नावभर बेगम उतारे बांदी डोंगाभरि, साहि सका-मसक उतारत दरियावहैं ॥ २८ ॥ गढ़न गजाय गढ़ धरन धसाय एकै, छांडि दया धरमै दुवारदे भिखारीसे। शाहके सपूत पूत बीर शिवराजसिंह, केते उमराव

कीन्हे बन बनचारीसे ॥ भूषण बखानै केते दिये बंदीखाने सेख सैयद हजारों गहे रैयत बजारीसे । मेहतासे मुगल महाजनसे महाराज, डाँड़ि लीन्हे पकरि पठान पटवारीसे ॥ २९ ॥ डाढ़ीके रखैयनकी डाढ़ीसी रहत छाती, बाढ़ी जसुहद मरजाद हिन्दवाने-की । कढिगई रैयत के मनकी कसक सब, मिटिगई ठसक तमाम तुरकानेकी ॥ भूषण भनत याते दिल्लीपति धक धकात, सुनि सुनि धाक शिवराज मरदानेकी । मोटी भई चण्डी बिन चोटीके दलन खाय, खोटी भई संपति चकत्ताके घरानेकी ॥ ३० ॥ जिन फन फुहकार उडतपहार भार, कूरम कठिन पीठ कमल बिदलि गो । विषजाल ज्वालामुखीलवलीन होत जिन, झारन चिकार दिग्गज मद लगलिगो ॥ कीन्हो जिहि पान पयपानसों जहान कुल, कूरम उछलि जलसिन्धु खलहलिगो ॥ खग्गखग्गराज महाराज शिवराज जूको, अखिल खल नाग मुगलनदल निगलिगो ॥ ३१ ॥ जोरा कर जैहै जुमलाहके नरेशपर, तोरा अरिखण्ड खण्ड सुभट समाज पै । भूषण असाम रूम बलख बुखारे जै है, चीन सिलहट तरी, जलधि जहाजपै ॥ सब उमरावनकी हठ कूरताई देख, कहत औ-रँगजेब शाह शिरताज पै । भीख मांग खैहैं बिन मनसबके रैहैं पै न, जैहैं हजरत महाबली शिवराज पै ॥ ३२ ॥ कैयक हजार जहां गुर्जबरदार ठाढ़े, करके हुश्यार नीति पकर समाजकी । रा-जा यशवन्तको बुलायके निकट राखै, तक तके नीरे जिन्है लाज स्वामिकाजकी ॥ भूषण बखानै ठेठ कहिये गुसलखाने, सिंहलों झपट साह तिन्है महाराजकी । हटकि हथ्यार फट बांधे उमरावन को, लीन्ही भेंट नौरंगने भेंट शिवराजकी ॥ ३३ ॥ सबनके ऊप-रही ठाढ़ो रहन जोगवेके, तहां खड़ो कियो जाय जारीयनके

नियरे। जानि गैर मिसिल गुसीले गुसा धरि, कीन्हीना सलाम न बचन बोले सियरे॥ भूषण भनत महावीर बलकन लाग्यो, सारी पादशाहीके उड़ाय गए जियरे। तमकितें लाल मुख शिवाको निरखि भयो, स्याह मुख औरंग सिपाहु मुख पियरे॥३४॥ दाराकी न दौर यह रार नहीं खजुवे की, बांधिवो नहीं है कैधों मीर शहबालको। मठ विश्वनाथ को न बास ग्राम गोकुलको, देवीको न देहरा न मन्दिर गोपालको॥ गाढ़े गढ़ लीन्हे अरु बैरी कतलान कीन्हे, ठौर ठौर हांसिल उगाहत है सालको। बूड़त है दिल्ली सो सँभारे क्यों न दिल्लीपति, धक्का आनि लाग्यो शिवराज महाकालको॥३५॥ किबलेकि ठौर बाप बादशाह शाहजहां, ताको कैद कियो मानो मक्के आग लाई है। बड़ो भाई दारा वाको पकड़के कैद कियो, मेहर-हुरन्नाहिमाको जायो सगो भाई है॥ बंधु तौ मुरादबक्स बाद चूक करबेको, बीचले कुरान खुदा की कसम खाई है। कहत भूषण भाट सुनहु नौरंगजेब, येते काम कीये फेर बादशाही पाई है॥ ३६ ॥ हाथों तसबीन लियें प्रात उठ बंदगी को, आपही कपटरूप कपट जप जपके। आगरेमें जाय दारा चौकमें चुनाय लीन्हो, छत्रही छिनाया मानो बूढ़े मरे बपके॥ कीन्हो है गातघात सोनो मैं नाहिं कहौं, पीलपै तुराये चार चुगलनके चटके। भूषण भनत शठ छंदी मतिमन्द भयो, सौ सौ चूहा खायके बिलाई बैठी तपके॥ ३७॥ राना भो चमेली और बेला सब राजा भये, ठौर ठौर रसलेत नित यह काज है। सिगरे अमीर आनि कुन्द होत घरघर, भ्रमत भ्रमर जैसे फूलनकी साज है॥ भूषण भनत शिवराजवीर तैंही देश, देशनिमें राखी सब दक्षिणकी लाज है। त्यागे सदा खट्पद पद अनुमान जैसे, अलि नौरंग-

जेब चम्पा शिवराज है ॥ ३८ ॥ कूरम कमल कमधुज है कदम्ब फूल, गौर है गुलाब राना केतकी विराज हैं। पाँडरी पँवार जूही सोहत है चंदावत, सरस बुँदेला सो चमेली साज बाज हैं॥ भूषन भनत मुचकुन्द बड़गूजर हैं, बघेले बसन्त सब कुसुम समाज हैं। लेइ रस एतेन को बैठि न सकत अहै, अलि नवरंगजेब चम्पा शिवराज हैं ॥ ३९ ॥ मोरंग कमाऊं औ पलाऊ बाँधि एक पल, कहाँलौं गिनाऊं जेब भूपतिके गोत हैं। भूषण भनत गिरि विकट निवासी लोग, बावनी बवंजा नवकोटि धुंध होत हैं ॥ काबुल कंधार खुरासान जेर कीन्हो जिन, मुगल पठान शेख सैयद ज्यों रोत हैं। अवलग जानत है बड़े होत बादशाह, शिवराज प्रकटेते राजा बड़े होत हैं ॥ ४० ॥ इंद्र जिमि जंभपर बाडव सुअंभपर, रावण सदम्भपर रघुकुलराजहै। पौन वारिवाहपर शंभु रतिनाहपर, ज्यों सहस्रबाहुपर राम द्विजराज है॥ दावा द्रुमदंडपर चीता मृगझुण्डपर, भूषन वितुण्डपर जैसे मृगराज है। तेज तिमिरंसपर कान्ह जिमि कंसपर, त्यों म्लेक्ष बंशपर शेर शिवराज हैं ॥ ४१ ॥ शक्र जिमि शैलपर अर्क तम फैलपर, विघनके रैलपर लम्बोदर लेखिये। राम दशकंधपर भीम जरासंधपर, भूषण ज्यों सिंधपर कुंभज विशेखिये॥ हर ज्यों अनङ्गपर गरुड़ ज्यों भुजङ्गपर, कौरवके अङ्गपर पारथ ज्यों पेखिये। बाज ज्यों विहङ्गपर, सिंह ज्यों मतङ्गपर तैसे, चतुरङ्गपर चिन्तामणि देखिये॥ ४२ ॥ वारिधिके कुंभज घनवनके दावानल, तरुण तिमिरहू के किरणसमाज हौ। कंसके कन्हैया कामधेनुहुके कंटकाल, कैटभके कालिका विहङ्गमके बाज हौ॥ भूषण भनत जगजालिमके सचीपति, पन्नगके कुलके प्रबल पक्षिराजहौ। रावणके राम सहस्रबाहुके परशुराम, दिल्लीपति दिग्गज

के सिंह शिवराजहो ॥ ४३ ॥ कुंभकरण असुर औतारी औरंगजेब, कीन्हीं मथुरा कतल दुहाईफेरी रबकी । खोद डारेदेवी देव शहर सुहला बांके, लाखोंकिये मुसला माला छूटगई तबकी ॥ भूषण भनत भाग्योकाशीपतिविश्वनाथ, और कौनगिनतीमैंभूलीगतिभवकी ॥ चारों बरण धर्म छोड़ कलमा निवाज पढ़, शिवाजू न होतो तौ सुनत होति सबकी ॥ ४४ ॥ सांचकर माने देवी देवता न जाने अरु, ऐसी उर आने मैं कहत बात तबकी । और पादशाहनके चाह हती हिन्दुनकी, शाहजहां अकबर सुनत साख जबकी ॥ बब्बरके ठब्बर हुमायूं हद्द बांध गए, दो में एक करी ना कुरान वेद मतकी । काशीकी कला जाती मथुरा मसीद होती, शिवाजी न होतो तौ सुनत होत सबकी ॥ ४५ ॥ देवल गिरावते फिरावत निशान आली, ऐसे डूबे राव राने सभी गए लबकी । गौरा गणपति आप औरनको देत ताप, आपके मकान सब मार गए दबकी ॥ पीरा पैगम्बरा दिगम्बरा दिखाई देत, सिद्धकी सिधाई गई रही पूर सबकी । काशिहुँते कला गई मथुरा मसीद भई, शिवाजी न होतो तौ सुनत होत सबकी ॥ ४६ ॥ वेद राखे विदित पुराण राखे सारयुत, राम नाम राख्यो अति रसना सुघरमैं । हिन्दुनकी चोटी रोटी राखीहै सिपाहिन की, कांधेमें जनेऊ राख्यो माला राखी गरमैं ॥ मीड़ राखे मुगल मरोड़ राखे बादशाह, बैरी पीस राखे बरदान राख्यो करमैं । राजनकी हद्द राखी तेगबल शिवराज, देव राखे देवल स्वधर्म्म राख्यो घरमैं ॥ ४७ ॥ मारकर बादशाही खाकसाही कीन्हीजिन जेर कीन्हीं जोरसो लै हद्द सब मारेकी । खिसगई शेखी फिसगई शूरताई सब, हिस गई हिम्मत हजारों लोग प्यारेकी ॥ बाजत

दमामे लाखों धौंसा आगे घुरजात, गरजत मेघ ज्यों बरातचढ़ै भारेकी । दूलहो शिवराज भयो दक्षिणी दमामेवाले, दिल्ली दुलहिन भई शहर सितारेको ॥ ४८ ॥ दावा पादशाहनसों कीन्हों शिवराज वीर, जेर कीन्हों मुल्क हद बांधी दरबारे से । हठी मरहठी तामें राख्यो ना मवास कोऊ, छीने हथियार डोलैं बन बनजारे से ॥ आमिषअहारी मांसहारी दै दै तारी नाचैं, खांडि तोड़ किरचैं उड़ाए समतारे से । फीलसम डील जाके गिरिसे गिरन लागे, मुण्ड मतवारे गिरे झुण्ड मतवारे से ॥ ४९ ॥ गरुड़कोदावा जैसे नागके समूहपर, दावा नागजूह पर सिंह शिरताज को । दावा पुरहूतको पहारनके कूलपर, पक्षिनके गणपर दावा जैसे बाजको ॥ भूषण अखण्ड नवखण्ड महिमण्डल में, तमपर दावा रविकिरण समाज को । पूरब पछांहदेश उत्तरते दक्षिणलौं, जहां बादशाही तहां दावा शिवराजको ॥ ५० ॥ दक्षिण जीति लियो दलके बल, पश्चिम जीतिकै चामर चाख्यो । रूप गुमान हत्यो गुजरातको, सूरतको रस चूसके नाख्यो ॥ पञ्जन पेल मलेच्छ मले सब, सोई बचो जेहि दीन है भाख्यो । सो रँगहैं शिवराज बली जिन, नौरँगमें रँग एक न राख्यो ॥ ५१ ॥ सपत नगेश आठो ककुभ गजेश कोल, कच्छप दिनेश धरैं धरणि अखण्ड को । पापी घालैं धरम सुपथ चालैं मारतण्ड, करतार प्रणपालैं प्राणिनके चण्डको ॥ भूषण भनत सदा सरजा शिवाजी गाजी, म्लेच्छनको मारै करि कीरति घमण्डको । जगकाज वारे निहचिन्त करि डारे सब, भोर देत आशिष तुम्हारे भुजदंडको ५२॥

श्रीछत्रशालदशक ॥

दोहा। इक हाड़ाबूंदी धमनी मरद महोबावाल।
सालत नौरङ्गजेबके ये दोनों छत्रशाल ॥ १ ॥
ये देखो छत्ता पता ये देखो छत्रमाल।
ये दिल्लीकी ढाल ये दिल्ली ढाहनवाल ॥ २ ॥

कवित्त। रैया राव चम्पतको चढ़ो छत्रशाल सिंह, भूषण भनत गजराज जोम जमकें। भादों की घटासी उठी गरदैं गगन घेरैं, सेलैं समसेरैं फेरैं दामिनीसी दमकैं। खान उमराउन के आन राजा राउनके, सुनि सुनि उर लागैं घन कैसी धमकैं। बैहर बगारनकी अरिके अगारनकी नागतीं तगारन नगारन की धमकैं ॥ १ ॥ हैवर हरद साज गैवर गरदसमै, पैदरके ठट्ठ फौज जुरी तुरकाने की। भूषण भनत राव चम्पतको छत्रसाल, रोप्यो रण ख्याल ह्वैके ढाल हिन्दुवानेकी। कैयक करार एकबार, बैरी मार डारे, रञ्जक दगन मानो अगिनि रिसानेकी। सेर अफगान सेन सगर-सुतन लगी, कपिल-सराप लौं तराप तोपखाने की ॥ २ ॥ दारासाहि औरङ्ग जुरेहैं दोऊ दिल्ली दल, एकै गए भाजि एकै गए रुंधि चालमें। बाजीकर कोऊ दगाबाजी करि राखो जिहि, कैसेहूं प्रकार प्रान बचत न कालमें ॥ हाथीते उतरि हाड़ा जूझो लोह लङ्गर दै, एती लाज कामें जेती लाज छत्रशालमें। तन तरवारनमें मन परमेश्वरमें, प्रन स्वामि-कारजमें नाथो हरमालमें ॥ ३ ॥ अक्ष गहि छत्रशाल खिंचो खेत बेतवैको, उतते पठानन हूं कीन्हीं झुकि झपटैं। हिम्मत बड़ीके गवड़ीके खिल-

बानन लौं, देतरे हजारन हजार बार लपटें। भूषन भनत काली हुलसी असीसनको, शीशनको ईशकी जमात जोर जपटें। समदलौं समदकी सेनापै बुंदेलनकी, सेलैं समसेरैं भईं बाड़वकी लपटें ॥ ४ ॥ चले चंदवान घनवान औ कुहूकवान, चलतकमान धूम आसमान छै रहो। चलीं जमदाढ़ें बाढ़वारें तरवारें जहां लोह आंच जेठको तरन मान व्है रहो ॥ ऐसे समै फौजें विचलाई छत्रशाल सिंह, अरिके चलाये पांय वीररस च्वैरहो। हय चले हाथी चले संग छाड़ि साथी चले, ऐसी चलाचलीमैं अचल हाड़ा ह्वै रहो ॥ ५ ॥ निकसत म्यानते मयूखें प्रलैभान कैसी, फारें तम तोमर गयंदनके जालको। लागत लपट कंठ बैरिनके नागिन सी, रुद्रही रिझावै दै दै मुण्डनकी मालको ॥ लाल क्षितिपाल छत्रशाल महा बाहुबली, कहांलौं बखान करों तेरी करवालको ॥ प्रतिभट कटक कटीले केते काटि काटि, कालिकासी किलकि कलेऊ देत कालको ॥ ६ ॥ रहत अछक पै मिटै न धक पीवनकी निपट जु नागी डर काहूके डरै नहीं। भोजन बनावै नित चोखे खान खाननकी, श्रोणित पचावै तऊ उदर भरै नहीं ॥ उगिलत आंसो सोऊ सकल समर बीच, राजै राउ बुद्धकर विमुख परै नहीं तेग या तिहारी मतवारीको अचक जौलौं, तौलौं गजराजनकी गजक करै नहीं ॥ ७ ॥ भुज भुजगेशकै वै सङ्गिनी भुजङ्गिनी सी, खेदि खेदि खाती देह दारुण दलनके। बखतर पाखरनि बीच धसिजात मीन, पैरि पार जात परवाह ज्यों जलनके। रैया राव चम्पतके छत्रशाल महाराज, भूषण सकत को बखानि यों बलन के। पच्छी परछीने ऐसे परे पर छीने बीर, तेरी बरछीने बरछीने हैं खलनके ॥ ८ ॥ चाकचक चमूके अचाक चक चहूं ओर, चाकसी फिरत धांक चम्पतिके लालकी। भूषण भनत बादशा-

ही मारि जेर कीरे, काहु उमराव ना करेरी करवाल की ॥ सुनि सुनि रीति बीर दैतके बड़प्पनकी, थप्पन उथप्पन की रीति छत्रशालकी ॥ जङ्ग जीति लेवा तेवे ह्वैके द्वामदेवा भूप, सेवा लागे करन महेबा महिपालकी ॥ ९ ॥ राजत अखंड तेज छाजत सुयश बड़ो, गाजत गयंद दिग्गजनि हीये साल को । जाहिके प्रतापसों मलीन आफताब होत, ताप तजि दुर्जन करत बहु ख्यालको ॥ साजि सजि गज तुरी कोतल कतारें दीन्हे, भूषण भनत ऐसो दीनप्रतिपाल को । और राजा राव मन एक हू न ल्याउँ अब, साहूको सराहौं की सराहौं छत्रशालको ॥ १० ॥

राजकुमाउँनरेशका कवित्त ।

उल्दत मद अनुमद ज्यों जलधिजल, बलहद भीमकद काहुके न आहके । प्रबल प्रचंड गंड मंडित मधुपवृन्द, विंदमे विलिंद सिंधु सातहुके थाहके ॥ भूषण भनत झूलि झंपनिझपा न झुकी, झुकत झुकत झहरात रथ हालके । मेघसे घमंडित मजेजदार तेजपुंज, गुञ्जतसो कुंजर कुमाउनरनाहके ॥ १ ॥

फुटकल ।

दिल्ली दलन गजायके सर सरजा निरशंक, लूटलियो सूरत शहर बंककरि अति डंक । बंककरि अति, डंककरिय स संककुलिखल ॥ सोच चकित, भरोचचलित, विमोचचखजल, हट्टहिक मन, कट्टहिक सुन, रट्टहिलिय, सद्दहमादिवि भद्दहिविभई रद्दहिलिय ॥ १ ॥

कवित्त—बालपनेमें तहौवरखानको, सैन समेत अँचै गयो भाइ, । ज्वानीमें रुण्डी औ खुण्डी हने, ए समुद्र अँचै कछु थाह

न पाई ॥ बैस बुढ़ापेकी भूत ज्यों गयो, पैगम्बर बंस समेत चबाई । खाय मलेच्छनके टुकरा पै, तऊ तुरकाको डकार न आई ॥ २ ॥ दरबर दौरिकरि नगर उजारि डारि, कटक कट्यो से काटे दुरजन दरबको । जाहिर जहान जंग जालिम है जोरावर, चलैन कछुक जोर एक सजा रबकी ॥ शिवराज तेरे त्रास दिल्ली भयो भूवकम्प, खरभर कांपत बिलायत अरबकी । हालति दहलि खग्ग काबिल कन्धार जब, रोषकर कढ़ै समशेर ज्यों गरबकी ॥ ३ ॥ काहूकी कुधारी काहु बंदरते पाउं धारी, पांडव पखारी खलनारी रजवट की । चढ़ी भुज दण्डपर चंचल अकास खेली लागी पर लाग लेन कामपे न अटकी ॥ खेलि दिल्ली बीच और गोलकुंडा बीजापुर, खेलत निहारी मरजादा सिन्धुतटकी । कहैं कविराज महाराज शिवराज वीर, तोपै तरवार है कै नाची नारि नटकी ॥ पच्चक कवच साज वाहन बयार बाज, गाढ़े दल गाज रहे दीरघ बदनके । भूषण भनत समशेर सोइ दामनी है, हेत नर कामिनीके मानके कदनके ॥ पैदल बलाका धुरवानके पताका गहैं, घेरियत चहूं ओर सूनेही सदनके । ना कर निरादर पियासों मिलो सादर, ये आये वीर बादर बहादुर मदनके ॥ ५ ॥ राखी हिंदवानी हिंदवानीको तिलक राख्यो, स्मृति पुराण राखे वेदविधि सुनी मैं । राखी रजपूती राजधानी राखी राजनकी, धरामें धरम राख्यो राख्यो गुन गुनीमैं ॥ कहै मतिराम जीत हद्द महदूनकी, देश देश कीरति बखाने पुनि सुनी मैं । साहुके सपूत शिवराज शमसेर तेरी, दिल्लीदल दाबिके दिवाल राखी दुनी मैं ॥ ६ ॥ हहडहे डङ्कनके शबद निशंक होत, बहबही शत्रुनकी सेना सब सरकी । हरकेम सुभट घटानकी घुमडि उठैं, चंपतको नन्द चढ़ो समर उमगकी ॥ हाथिनकी भफ्क,

मार गगकी घुमण्ड, त्यों त्यों लालाकी उमण्ड छत्रशाल सुखसर की । कड़कि कड़कि उठे भुजा शस्त्र बाहिबेको, फरकि फरकि उठे करी बखतरकी ॥ ७ ॥ शस्त्र गहि धायो राय चंपतको छत्रशाल उग्र अस्त्र शत्रुन अछिद्र छाप छांडिसे । हरिकेश तैसे घोर घमत निशान प्रले धमजातु थानके दिमाक जात डांडिसे ॥ रथ चक्र चचक सचक महि माचतहीं, मसके अचल कांचे भसमके भांडिसे । कलेसे कमठपर शेषके सहस फन, फूलि फूलि फूटि जात फूहरके भांडिसे ॥ २ ॥ घननकी घोरते घनी न घरनीनते, हथ्यारनसे गए पखण्डिन बिछोहासे । कहे हरकेस मार धारकी लहरनमें, महलनमें दिगीसपरे तलफत रोहासे ॥ पञ्च महिदेस बीर ते रे दल दौर तहीं, हैं गये पहार तुङ्ग पुङ्गीफल दोहासे । कायल भो कूर घन घायल कमठ ताकी, पीठि रहे चपाकि फनिन्द फन फोहासे ॥ ३ ॥ रन वन घूमैं तुव भुज लतिका पै चढ़ी, कढ़ी म्यान बापी ते विसम विष भरी है । जा अरिको डसै सोतो तजै प्राण ताही छिन गारुडु अनेक हारे झार ते न झरीहै ॥ भनत कविंदराउ वुद्ध अनुरुद्ध तनै, शुद्ध बीरतासों एक तेहीं बस करीहै । तरल तिहारी तरवार पन्नगीको कहूं, तन्त्रहै न मंत्रहै न यन्त्रहै न जरीहै ॥ ४ ॥ तनै छत्रशालके हठीले राव भावसिंह, ते रे त्रास दुरजन जात भये भोयसे । कहै मतिराम जाके तेज मांह मारुतके, मारतण्डहूके गुन रहे हैं समोयसे ॥ उड़ि जात नए जात फूटि फूटि फाटिजात, मिटि जात सुरिजात सूखिजात गोयसे । तूलसे तरोवरसे तिनुकासे तोयदसे, तिमिरसे तारासे तमीपतिसे तोयसे ॥ कीवेके समान प्रभु ढूंढि देख्यो आन पै, निदान दान युद्धमें नकोऊ ठहरातहैं ॥ पञ्चम प्रचण्ड भुजदण्डको बखान सुनि, भाजिबेकों पक्षीलों पठान फहरातहैं ॥ शूङ्गामान सखत अमीर दिल्लीवारेजब, चम्पतके नन्द,

के नगारे घहरात हैं । चहूँओर तकित चकताके दलनमें, छत्ताके प्रतापके पताके फहरात हैं ॥ ६ ॥

कवि चिरञ्जीव ।

घनाक्षरी ।

सह्यो खड्गवान पै न सह्यो मानहान नेकौ, नेकुक त्रिमारि शिखा सूत्र यज्ञपत्रीको । छाड्यो सुख सार्‍यो पै न छांड्यो निज धर्म्म एकौ, देव द्विज पूजन पुरानी रीति छत्री को ॥ कवि चिरजीव जीव त्रिणके समान जान, पाल्यो सुपवित्र पन्थ गर्ग अरु अत्रीको । रीस कीन्ह्यो भले पै न शीस नायो औरङ्गको शिवराज उरमें विचारि गुन क्षत्रीको ॥ १ ॥ जौलौं प्रान कण्ठ मैं न तबलौं चिरजीवी कभू इसलाम औ जिनको अक्षर उचारिबो । जौलौं मुण्ड रुण्डपै संयोग करै करतार, तौलौं ये पवित्र शीश ता-पग न धारिबो ॥ बूझे हम दीक्षित सुमन्त्र शिवराज तेरो वैरमें विधर्म्मिनके जीवन बिदारिबो । तेरे भव्य भाल पै लिख्यो है यही जाने हम जौलौं जग जीनो तौलौं म्लेच्छन संहारिबो ॥ २ ॥ मेवाको न वृष तोसों सुफल कियो है कोऊ, लोहको न कोऊ तोसों चनक चबायो है । शिखासूत्र साहिबीकी बिरद बिभूति वारी, तोसों को करेजो काढ़ि जगको दिखायो है ॥ यजू शिवराज तोसों कवि चिरजीव भास, तेरोई सुजन्म गिनतीमें एक आयो है । यमन महीपनके मान मथिवेको, जगदीश यादुनीमें एक तोहीको बनायो है ॥ ३ ॥ जयसिंह शेरहूको कछूना सिरात जापै, यशवन्त भेंड़की तहांपै कथा कमाई है । जहां मरें लोकेश

औरंगजेब न [illegible] खांकी करामत [illegible] है ॥ देखबेके दिलको चलावै कौन चिरजीव, फैजल सुगाह जहां हिम्मत हराई है। कजून सु काननते कौनको न सूले प्राण शिवराज सिंह जह पावत सदाई है ॥ ४ ॥ औरङ्गजेब शासते निकसबेको तेरो काम, करनी अमानुषी तुहीमैं कही जावेगी। पांचते पचासनके मारिबेकी तोमैं शक्ति, समता सु सिंहकी तुहीमैं छवि पावैगी ॥ महाराष्ट्र भूषण महीप शिवराज तुरी, चिरजीवी वीरता ये जगते न जावैगी ॥ प्रबल लौं महीतलमैं बड़े बड़े वीरनके उरके सिंहासन उच्च थान पावैगी ॥ ५ ॥ सैनिक सइस्ता खांकी मिलन चलनौं कौन कल्लवेष जाको अति अकिल भुलावै है। दुसह चढ़ाई दुर्ग रुद्रगढ़ मण्डलकी, मानुषी शरीरनके उर ना समावै है ॥ चिरजीवी भूप महाराज शिवराज तेरी, साहस कहानी जो खिवौ हू उर आनै है। द्वै घरी दुर्गमैं दाना हीनन मनुष्यनके एक एक आज्ञनिको अर्जुन बनावै है ६ बिना शस्त्र जीते यशवन्तसे महीपनको निज सैनहीते जापै बुद्धिधी सिरति है। परिकै सुहाय जे सिंह बुद्धि सागरोके, प्राणनबचाये जापै देंह सिसिरति है ॥ तेरे युद्ध कौशल कलाप पै शिवाजू आज चिरजीव आजकी विभूति बिसरतिहै। राति करै दिल्लीमैं प्रभात करै पूना जाको सुनिके औरङ्गकी न सांस निसरति है ॥ ७ ॥ अकस्मात पतन प्रचण्ड चंद्रवानवृन्द, तड़िता उलङ्ग असि और अवगाहै हैं। झाटिका अपार सोई दर्शत अक्षत अस्त्र, हर हर उचार दीह दादुर कथाहै है ॥ आफत असह्य अतिशोभ हेत चिरजीव मेघ भरहहू पै जो चहुंघा उमाहे हैं। औरङ्गजेब ग्रीषम प्रतापपै सदाय मानौं शिवराज पावसकी चिगड़ी सिपाहैं हैं ॥ ८ ॥ छयं ना चलत तमैं झाटिका चहति हर्ष, ऊनब न प्राण भई देह सुखरासी है। मिल्यो